قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣١﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ

बेशक हम भेजे गए हैं	उन्हों ने जवाब दिया	31	भेजे हुए (फ़रिश्तो)	ऐ	मक़सद तुम्हारा	तो क्या	उस ने कहा

اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ طِيْنٍ ﴿٣٣﴾ مُّسَوَّمَةً

निशान किए हुए	33	पकी हुई मिट्टी से	पत्थर	उन पर	ताकि हम भेजें (बरसाएं)	32	मुज्रिम क़ौम (मुज्रिमों की क़ौम)	तरफ़

عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣٤﴾ فَاَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيْهَا مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٥﴾

35	ईमान वाले	से	उस में	जो था	पस हम ने निकाल लिया	34	हद से गुज़र जाने वालों के लिए	तुम्हारे रब के हां

فَمَا وَجَدْنَا فِيْهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٣٦﴾ وَتَرَكْنَا فِيْهَآ اٰيَةً

एक निशानी	उस में	और हम ने छोड़ दी	36	मुसलमानों	से-का	एक घर के सिवा	उस में	पस हम ने न पाया

لِّلَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٣٧﴾ وَفِيْ مُوْسٰٓى اِذْ اَرْسَلْنٰهُ

जब हम ने उसे भेजा	और मूसा (अ) में	37	दर्दनाक अ़ज़ाब	जो डरते हैं	उन लोगों के लिए

اِلٰى فِرْعَوْنَ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾ فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ وَقَالَ سٰحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿٣٩﴾

39	या दीवाना	जादूगर	और कहा	अपनी कुव्वत के साथ	तो उस ने सरताबी की	38	रोशन दलील (मोजिज़े) के साथ	फ़िरऔ़न की तरफ़

فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿٤٠﴾ وَفِيْ عَادٍ

और आद में	40	मलामत ज़दा	और वह	दर्या में	फिर हम ने उन्हें फेंक दिया	और उस का लश्कर	पस हम ने उसे पकड़ा

اِذْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيْحَ الْعَقِيْمَ ﴿٤١﴾ مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ اَتَتْ

आती	किसी शै को	वह न छोड़ती थी	41	नामुबारक आन्धी	उन पर	जब हम ने भेजी

عَلَيْهِ اِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيْمِ ﴿٤٢﴾ وَفِيْ ثَمُوْدَ اِذْ قِيْلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوْا

फ़ाइदा उठा लो	उन को	जब कहा गया	और समूद में	42	गली सड़ी हड्डी की तरह	मगर उसे कर देती	जिस पर

حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٤٣﴾ فَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ

बिजली की कड़क	पस उन्हें पकड़ा	अपने रब का हुक्म	से	तो उन्हों ने सरकशी की	43	एक मुद्दत तक

وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مِنْ قِيَامٍ وَّمَا كَانُوْا مُنْتَصِرِيْنَ ﴿٤٥﴾

45	खुद अपनी मदद करने वाले	और वह न थे	खड़ा होने की	पस उन में सकत न रही	44	देखते थे	और वह

ع ٢ ٢٣ ١ وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٤٦﴾

46	लोग नाफ़रमान	थे	बेशक वह	उस से कब्ल	और नूह (अ) की क़ौम

وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْىدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا

हम ने फ़र्श बनाया उसे	और ज़मीन	47	वसीउ़ल कुदरत हैं	और बेशक हम	हाथ (कुव्वत) से	हम ने उसे बनाया	और आस्मान

فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ

ताकि तुम	दो जोड़े (क़िस्म)	हम ने पैदा किए	हर शै	और से	48	पस हम कैसा अच्छा बिछाने वाले हैं

تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٩﴾ فَفِرُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ اِنِّيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥٠﴾

50	वाज़ेह	डर सुनाने वाला	उस से	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	अल्लाह की तरफ़	पस तुम दौड़ो	49	नसीहत पकड़ो

उस (इब्राहीम अ) ने कहा ऐ फ़रिश्तो!
तुम्हारा मक़सद क्या है? (31)
उन्हों ने जवाब दिया: बेशक हम मुज्रिमों
की क़ौम की तरफ़ भेजे गए हैं। (32)
ताकि हम उन पर पकी हुई मिट्टी
के पत्थर (संगरेज़े) बरसाएं। (33)
तुम्हारे रब के हां हद से गुज़र जाने
वालों के लिए निशान किए हुए। (34)
पस हम ने निकाल लिया (उन्हें) जो
उस (शहर) में ईमान वाले थे। (35)
पस हम ने उस (शहर) में (लूत अ) के
सिवा मुसलमानों का घर न पाया। (36)
और हम ने छोड़ दी दर्दनाक अ़ज़ाब
से डरने वालों के लिए उस शहर
में एक निशानी। (37)
और मूसा (अ) में (भी एक निशानी) है,
जब हम ने उसे फ़िरऔ़न की तरफ़
भेजा रोशन मोजिज़े के साथ। (38)
तो उस (फ़िरऔ़न) ने अपनी
कुव्वत (अरकाने सलतनत) के साथ
सरताबी की और कहा कि यह
जादूगर या दीवाना है। (39)
पस हम ने उसे और उस के
लश्कर को पकड़ा, फिर हम ने
उन्हें फेंक दिया दर्या में और वह
मलामत ज़दा (रह गया)। (40)
और (तुम्हारे लिए निशानी है) आद
में, जब हम ने उन पर नामुबारक
आन्धी भेजी। (41)
वह किसी शै को न छोड़ती थी जिस
पर वह आती मगर उसे एक गली
सड़ी हड्डी की तरह कर देती। (42)
और समूद में (भी एक निशानी है)
जब उन्हें कहा गया कि एक (थोड़ी)
मुद्दत और फ़ाइदा उठा लो। (43)
तो उन्हों ने अपने रब के हुक्म से
सरकशी की, पस उन्हें बिजली की कड़क
ने आ पकड़ा उन के देखते देखते। (44)
पस उन में खड़ा होने की सकत न
रही और न खुद अपनी मदद
कर सकते थे। (45)
और नूह (अ) की क़ौम को उस से
कब्ल (हम ने हलाक किया), बेशक
वह नाफ़रमान लोग थे। (46)
और हम ने आस्मान को बनाया
अपने ज़ोर से और बेशक हम उस
की कुदरत रखते हैं। (47)
और हम ने ज़मीन को (बतौर)
फ़र्श बनाया, और हम कैसा अच्छा
बिछाने वाले हैं। (48)
और हर शै से हम ने दो क़िस्म पैदा
कीं ताकि तुम नसीहत पकड़ो। (49)
पस तुम अल्लाह की तरफ़ दौड़ो,
बेशक मैं तुम्हारे लिए उस (की तरफ़)
से वाज़ेह डराने वाला हूँ। (50)

وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ؕ اِنِّیْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿۵۱﴾ كَذٰلِكَ

इसी तरह	51	वाज़ेह डर सुनाने वाला	उस से	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	कोई दूसरा माबूद	अल्लाह के साथ	और तुम न ठहराओ

مَاۤ اَتَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿۵۲﴾

52	या दीवाना	जादूगर	उन्हों ने कहा	मगर	कोई रसूल	इन से पहले	वह जो	नहीं आया

اَتَوَاصَوْا بِهٖ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿۵۳﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَاۤ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ﴿۵۴﴾

54	कोई इल्ज़ाम	तो नहीं आप (स)	पस आप (स) मुँह मोड़ लें उन से	53	सरकश	लोग	बल्कि वह	क्या उन्हों ने एक दूसरे को वसीयत की उस की

وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۵۵﴾ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ

और इन्सान	जिन्न	और नहीं पैदा किया मैं ने	55	ईमान लाने वाले	नफ़ा देता है	समझाना	तो बेशक	आप (स) समझाएं

اِلَّا لِیَعْبُدُوْنِ ﴿۵۶﴾ مَاۤ اُرِیْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَاۤ اُرِیْدُ اَنْ

कि	और मैं नहीं चाहता	कोई रिज़्क़	उन से	मैं नहीं मांगता	56	इस लिए कि वह मेरी इबादत करें	मगर-सिर्फ़

یُّطْعِمُوْنِ ﴿۵۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِیْنُ ﴿۵۸﴾ فَاِنَّ

पस बेशक	58	निहायत कुदरत वाला	कुव्वत वाला	राज़िक़	वह	बेशक अल्लाह	57	वह मुझे खिलाएं

لِلَّذِیْنَ ظَلَمُوْا ذَنُوْبًا مِّثْلَ ذَنُوْبِ اَصْحٰبِهِمْ فَلَا یَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿۵۹﴾

59	पस वह जल्दी न करें	उन के साथी	पैमाने	जैसे	डोल (पैमाने)	उन लोगों के लिए जिन्हों ने ज़ुल्म किया

فَوَیْلٌ لِّلَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ یَّوْمِهِمُ الَّذِیْ یُوْعَدُوْنَ ﴿۶۰﴾ ع ٣ ١٤ ٢

60	उन से वादा किया जाता है	वह जिस	उन का दिन	से-का	उन लोगों के लिए जिन्हों ने इन्कार किया	सो बरबादी

اٰیَاتُهَا ٤٩ ❀ سُوْرَةُ الطُّوْرِ (٥٢) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

आयात 49 — (52) सूरतुत तूर पहाड़ — रुकुआत 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالطُّوْرِ ﴿۱﴾ وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ﴿۲﴾ فِیْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ﴿۳﴾ وَّالْبَیْتِ الْمَعْمُوْرِ ﴿۴﴾

4	और बैते मअ़मूर	3	खुले	औराक़ में	2	लिखी हुई	और किताब	1	क़सम तूर (सीना)

وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ﴿۵﴾ وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ ﴿۶﴾ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ﴿۷﴾

7	ज़रूर वाक़े होने वाला	तेरे रब का अ़ज़ाब	बेशक	6	और दर्या जोश मारता	5	बुलन्द	और छत

مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ﴿۸﴾ یَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ﴿۹﴾ وَّتَسِیْرُ الْجِبَالُ سَیْرًا ﴿۱۰﴾

10	चलने की तरह	पहाड़	और चलेंगे	9	थरथरा कर	आस्मान	जिस दिन थरथराएगा	8	कोई टालने वाला	नहीं उस को

فَوَیْلٌ یَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ ﴿۱۱﴾ الَّذِیْنَ هُمْ فِیْ خَوْضٍ یَّلْعَبُوْنَ ﴿۱۲﴾ یَوْمَ وقف لازم

जिस दिन	12	खेलते हैं	मशग़ला में	वह	वह जो	11	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	सो बरबादी

یُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ﴿۱۳﴾ هٰذِهِ النَّارُ الَّتِیْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿۱۴﴾

14	झुटलाते	उस को	तुम थे	वह आग जो	यह है	13	धक्के दे कर	जहन्नम की आग	तरफ़	वह धकेले जाएंगे

और अल्लाह के साथ किसी दूसरे को माबूद न ठहराओ, मैं बेशक तुम्हारे लिए उस (की तरफ़) से वाज़ेह डर सुनाने वाला हूँ। (51)
इसी तरह नहीं आया कोई रसूल (उन के पास) जो इन से पहले थे मगर उन्हों ने (उसे) जादूगर या दीवाना कहा। (52)
क्या उन्हों ने एक दूसरे को उस की वसीयत की है? बल्कि वह सरकश लोग हैं। (53)
पस आप (स) उन से मुँह मोड़ लें तो आप (स) पर कोई इल्ज़ाम नहीं। (54)
और आप (स) समझाएं, बेशक समझाना ईमान लाने वालों को नफ़ा देता है। (55)
और मैं ने पैदा किए जिन्न और इन्सान सिर्फ़ इस लिए कि वह मेरी इबादत (बन्दगी और फ़रमांबरदारी) करें। (56)
मैं उन से कोई रिज़्क़ नहीं मांगता और मैं नहीं चाहता कि वह मुझे खिलाएं। (57)
बेशक अल्लाह ही राज़िक़ है, कुव्वत वाला, निहायत कुदरत वाला। (58)
पस बेशक जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उन के लिए (अ़ज़ाब के) पैमाने हैं, जैसे पैमाने उन के साथियों के लिए थे, पस वह जल्दी न करें। (59)
सो उन लोगों के लिए बरबादी है जिन्हों ने उस दिन का इन्कार किया जिस का उन से वादा किया जाता है। (60)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़सम है तूरे सीना की। (1)
और लिखी हुई किताब की, (2)
खुले औराक़ में। (3)
और बैते मअ़मूर (फ़रिश्तों के कअ़बाए आस्मानी) की। (4)
और बुलन्द छत की। (5)
और जोश मारते दर्या की। (6)
बेशक तेरे रब का अ़ज़ाब ज़रूर वाक़े होने वाला है। (7)
उसे कोई टालने वाला नहीं। (8)
जिस दिन थरथराएगा आस्मान (बुरी तरह) थरथरा कर, (9)
और चलेंगे पहाड़ चलने की तरह (उड़े फिरेंगे)। (10)
सो उस दिन झुटलाने वालों के लिए बरबादी है। (11)
वह जो मशग़ले में (बेहूदगी से) खेलते हैं। (12)
जिस दिन वह जहन्नम की आग की तरफ़ धक्के दे कर धकेले जाएंगे। (13)
यह है वह आग जिस को तुम झुटलाते थे। (14)

اَفَسِحْرٌ هٰذَآ اَمْ اَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ ﴿١٥﴾ اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا ۚ

न सब्र करो	या	फिर तुम सब्र करो	उस में दाख़िल हो जाओ	15	दिखाई नहीं देता तुम्हें	या तुम	यह	तो क्या जादू

سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ۭ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ

बेशक मुत्तक़ी (जमा)	16	जो तुम करते थे	सो इस के सिवा नहीं कि तुम्हें बदला दिया जाएगा	तुम पर	बराबर

فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَعِيْمٍ ﴿١٧﴾ فٰكِهِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ۚ وَوَقٰىهُمْ

और बचाया उन्हें	उन के रब ने	उस के साथ जो दिया उन्हें	ख़ुश होंगे	17	और नेमतों	बाग़ों में

رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿١٨﴾ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا ۢبِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾

19	जो तुम करते थे	उस के बदले में	रचते पचते	और तुम पियो	तुम खाओ	18	दोज़ख़	अ़ज़ाब	उन के रब ने

مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰي سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍ ۚ وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ﴿٢٠﴾ وَالَّذِيْنَ

और जो लोग	20	बड़ी आँखों वाली हूरें	और उन की ज़ौजियत में दिया हम ने	सफ़ बस्ता	तख़्तों पर	तकिया लगाए हुए

اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِاِيْمَانٍ اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ

और	उन की औलाद	उन के साथ	हम ने मिला दिया	ईमान के साथ	उन की औलाद	और उन्हों ने पैरवी की	ईमान लाए

اَلَتْنٰهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ۭ كُلُّ امْرِیٍٔۢ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ﴿٢١﴾

21	रहन	उस ने कमाया (आमाल)	उस में जो	हर आदमी	कोई चीज़ (कुछ)	उन के अ़मल से	कमी नहीं की हम ने

وَاَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٢٢﴾ يَتَنَازَعُوْنَ فِيْهَا

उस में	लपक लपक कर ले रहे होंगे	22	जो उन का जी चाहेगा	उस से	और गोश्त	फलों के साथ	और हम उन की मदद करेंगे

كَاْسًا لَّا لَغْوٌ فِيْهَا وَلَا تَاْثِيْمٌ ﴿٢٣﴾ وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ

उन के लिए	ख़िदमतगार लड़के	उन पर- के	और इर्द गिर्द फिरेंगे	23	और न गुनाह की बात	उस में	न बकवास	प्याला

كَاَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٢٤﴾ وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰي بَعْضٍ

बाज़ पर (दूसरे की तरफ़)	उन में से बाज़ (एक)	और मुतवज्जेह होगा	24	छुपा कर रखे हुए	मोती	गोया वह

يَّتَسَاۗءَلُوْنَ ﴿٢٥﴾ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِيْٓ اَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ ﴿٢٦﴾

26	डरते थे	अपने अहले ख़ाना में	पहले	बेशक हम थे	वह कहेंगे	25	आपस में पूछते हुए

فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَوَقٰىنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ

इस से क़ब्ल	बेशक हम थे	27	गर्म हवा (लू)	अ़ज़ाब	और हमें बचा लिया	हम पर	तो एहसान किया अल्लाह ने

ع ١ ٢٨ ٣ نَدْعُوْهُ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ ﴿٢٨﴾ فَذَكِّرْ فَمَآ اَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ

अपना रब	फ़ज़्ल से	तो आप (स) नहीं	पस आप (स) नसीहत करें	28	रहम करने वाला	एहसान करने वाला	वही	बेशक वह	हम उस को पुकारते

بِكَاهِنٍ وَّلَا مَجْنُوْنٍ ﴿٢٩﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهٖ

उस के साथ	हम मुन्तज़िर हैं	शायर	वह कहते हैं	क्या	29	दीवाना	और न	काहिन

رَيْبَ الْمَنُوْنِ ﴿٣٠﴾ قُلْ تَرَبَّصُوْا فَاِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُتَرَبِّصِيْنَ ﴿٣١﴾

31	इन्तिज़ार करने वाले	से	तुम्हारे साथ	बेशक मैं	तुम इन्तिज़ार करो	फ़रमा दें	30	ज़माना	हवादिस

तो क्या यह जादू है? या तुम को दिखाई नहीं देता? (15) उस में दाख़िल हो जाओ, फिर तुम सब्र करो या न सब्र करो, तुम्हारे लिए बराबर है, इस के सिवा नहीं कि जो तुम करते थे तुम्हें (उस का) बदला दिया जाएगा। (16) बेशक मुत्तक़ी (बहिश्त के) बाग़ों और नेमतों में होंगे। (17) उस के साथ ख़ुश होंगे जो उन के रब ने उन्हें दिया, और उन के रब ने उन्हें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा लिया। (18) तुम खाओ और पियो मज़े से (जी भर कर) उस के बदले में जो तुम करते थे। (19) तख़्तों पर सफ़ बस्ता तकिये लगाए हुए। और हम उन की शादी कर देंगे बड़ी आँखों वाली हूरों से। (20) और जो लोग ईमान लाए और उन की औलाद ने ईमान के साथ उन की पैरवी की, हम ने उन की औलाद को उन के साथ मिला दिया और हम ने उन के अ़मल से कुछ कमी नहीं की, हर आदमी अपने आमाल में रहन है। (21) और हम उन की मदद करेंगे फलों और गोश्त से, जो उन का जी चाहेगा। (22) वह एक दोसरे से प्याले लपक लपक कर ले रहे होंगे जिस में न बकवास होगी न गुनाह की बात। (23) और उन के इर्द गिर्द फिरेंगे ख़िदमतगार लड़के। गोया वह छुपा कर रखे हुए मोती हैं। (24) और उन में से एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जेह होगा आपस में पूछते हुए। (25) वह कहेंगे बेशक हम इस से पहले अहले ख़ाना में डरते थे। (26) तो अल्लाह ने हम पर एहसान किया और हमें बचा लिया लू के अ़ज़ाब से। (27) बेशक इस से क़ब्ल हम उस को पुकारते थे, बेशक वही एहसान करने वाला, रहम करने वाला है। (28) पस आप (स) नसीहत करते रहें, पस आप (स) अपने रब के फ़ज़्ल से न काहिन हैं न दीवाने। (29) क्या वह कहते हैं कि यह शायर है, हम उस के साथ हवादिसे ज़माने के मुन्तज़िर हैं। (30) आप (स) फ़रमा दें तुम इन्तिज़ार करो, बेशक मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों में से हूँ। (31)

اَمْ تَاْمُرُهُمْ اَحْلَامُهُمْ بِهٰذَآ اَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿٣٢﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ تَقَوَّلَهٗ

इस ने उसे घड़ लिया है	क्या वह कहते हैं?	32	सरकश लोग	या वह	यही	उन की अक़्लें	क्या हुक्म देती (सिखाती) हैं उन्हें

بَلْ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾ فَلْيَاْتُوْا بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهٖٓ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ﴿٣٤﴾

34	सच्चे	अगर वह हैं	इस जैसी	एक बात	तो चाहिए कि वह ले आएं	33	वह ईमान नहीं लाते	बल्कि

اَمْ خُلِقُوْا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ اَمْ هُمُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٣٥﴾ اَمْ خَلَقُوا

क्या उन्हों ने पैदा किए?	35	पैदा करने वाले	या वह	बग़ैर किसी शै	से	क्या वह पैदा किए गए हैं

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ بَلْ لَّا يُوْقِنُوْنَ ﴿٣٦﴾ اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَبِّكَ

तेरा रब	ख़ज़ाने	क्या उन के पास	36	वह यक़ीन नहीं रखते	बल्कि	और ज़मीन	आस्मान (जमा)

اَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ اَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَّسْتَمِعُوْنَ فِيْهِ ۚ فَلْيَاْتِ

तो चाहिए कि लाए	उस में-पर	वह सुनते हैं	कोई सीढ़ी	क्या उन के लिए-पास	37	दारोग़े	या वह

مُسْتَمِعُهُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾ اَمْ لَهُ الْبَنٰتُ وَلَكُمُ الْبَنُوْنَ ﴿٣٩﴾

39	बेटे	और तुम्हारे लिए	बेटियां	क्या उस के लिए	38	खुली	कोई सनद	उन का सुनने वाला

اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿٤٠﴾ اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ

ग़ैब	क्या उन के पास	40	दबे जाते हैं	तावान से	तो वह	कोई अजर	क्या तुम उन से मांगते हो

فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٤١﴾ اَمْ يُرِيْدُوْنَ كَيْدًا ۭ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا هُمُ

वही	तो जिन लोगों ने कुफ़्र किया	किसी दाओ	क्या वह इरादा रखते हैं	41	पस वह लिख लेते हैं

الْمَكِيْدُوْنَ ﴿٤٢﴾ اَمْ لَهُمْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ ۭ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٣﴾

43	उस से जो शिर्क करते हैं	पाक है अल्लाह	अल्लाह के सिवा	कोई माबूद	क्या उन के लिए	42	दाओ में गिरफ़्तार होंगे

وَاِنْ يَّرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَآءِ سَاقِطًا يَّقُوْلُوْا سَحَابٌ مَّرْكُوْمٌ ﴿٤٤﴾

44	तह ब तह (जमा हुआ)	बादल	वह कहते हैं	गिरता हुआ	आस्मान से	कोई टुकड़ा	वह देखें	और अगर

فَذَرْهُمْ حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ فِيْهِ يُصْعَقُوْنَ ﴿٤٥﴾ يَوْمَ

जिस दिन	45	बेहोश कर दिए जाएंगे	उस में	वह जो	अपना दिन	वह मिलें	यहां तक कि	पस छोड़ दो उन को

لَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَاِنَّ

और बेशक	46	मदद किए जाएंगे	और न वह	कुछ भी	उन का दाओ	उन से-का	न काम आएगा

لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا عَذَابًا دُوْنَ ذٰلِكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٧﴾

47	नहीं जानते	उन में से अक्सर	और लेकिन	वरे-अ़लावा उस	अ़ज़ाब	उन लोगों के लिए जिन्हों ने ज़ुल्म किया

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَاِنَّكَ بِاَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ

और आप (स) पाकीज़गी बयान करें अपने रब की तारीफ़ के साथ	हमारी आँखों (हिफ़ाज़त) में	बेशक आप (स)	अपने रब के हुक्म पर	और आप (स) सब्र करें

حِيْنَ تَقُوْمُ ﴿٤٨﴾ وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاِدْبَارَ النُّجُوْمِ ﴿٤٩﴾ ع ٢ ٢١

49	सितारों	और पीठ फेरते	पस उस की पाकीज़गी बयान करें	रात	और से (में)	48	आप (स) उठें	जिस वक़्त

क्या उन की अ़क़्लें उन्हें यही सिखाती हैं? या वह सरकश लोग हैं। (32) क्या वह कहते हैं कि उस ने उसे (क़ुरआन) को घड़ लिया है (नहीं) बल्कि वह ईमान नहीं लाते। (33) तो चाहिए कि वह उस जैसी एक बात ले आएं अगर वह सच्चे हैं। (34) क्या वह पैदा किए गए हैं बग़ैर किसी शै (बनाने वाले) के, या वह (ख़ुद) पैदा करने वाले हैं। (35) क्या उन्हों ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को? (नहीं) बल्कि वह यक़ीन नहीं रखते। (36) क्या उन के पास तेरे रब (की रहमत) के ख़ज़ाने हैं? या वह दारोग़े हैं? (37) क्या उन के पास कोई सीढ़ी है? जिस पर (चढ़ कर) वह सुनते हैं, तो चाहिए कि उन का सुनने वाला कोई खुली सनद लाए। (38) क्या उस के बेटियां और तुम्हारे लिए बेटे? (39) क्या आप (स) उन से मांगते हैं कोई अजर? कि वह तावान (के बोझ) से दबे जाते हैं। (40) क्या उन के पास (इल्मे) ग़ैब है? कि वह लिख लेते हैं। (41) क्या वह इरादा रखते हैं किसी दाओ का? तो जिन लोगों ने कुफ़्र किया वही दाओ में गिरफ़्तार होंगे। (42) क्या उन के लिए अल्लाह के सिवा कोई माबूद है? अल्लाह उस से पाक है जो वह शिर्क करते हैं। (43) और अगर वह आस्मान से कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें तो वह कहते हैं: बादल जमा हुआ एक के ऊपर एक। (44) पस तुम उन को छोड़ दो यहां तक कि वह मिलें (देख लें) अपना वह दिन जिस में वह बेहोश कर दिए जाएंगे। (45) जिस दिन उन का दाओ कुछ भी उन के काम न आएगा और न उन की मदद की जाएगी। (46) और बेशक जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उन के लिए उस के अ़लावा अ़ज़ाब है। लेकिन उन में अक्सर नहीं जानते। (47) और आप (स) अपने रब के हुक्म पर सब्र करें, बेशक आप (स) हमारी हिफ़ाज़त में हैं और आप (स) अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करें जिस वक़्त आप (स) उठें। (48) और रात में (भी), पस उस की पाकीज़गी बयान करें और सितारों के पीठ फेरते (ग़ाइब होते) वक़्त (भी)। (49)

آيَاتُهَا ٦٢ ❀ سُوْرَةُ النَّجْمِ (٥٣) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

आयात 62	(53) सूरतुन नज्म सितारा	रुकूआत 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى ﴿١﴾ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ﴿٢﴾ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ

से	और वह नहीं बात करते	2	वह भटके	और न	तुम्हारे रफ़ीक़	न बहके	1	वह ग़ाइब होने लगे	जब	सितारे की क़सम

الْهَوٰى ﴿٣﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ﴿٤﴾ عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ﴿٥﴾

5	सख़्त क़ुव्वतों वाला	उस ने उसे सिखाया	4	भेजी जाती है	वहि	वह सिर्फ़	नहीं	3	ख़्वाहिश

ذُوْ مِرَّةٍ ؕ فَاسْتَوٰى ﴿٦﴾ وَهُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ﴿٧﴾ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ﴿٨﴾

8	फिर और नज़्दीक हुआ	फिर वह नज़्दीक हुआ	7	सब से बुलन्द	किनारे पर	और वह	6	फिर सामने आया	ताक़तों वाला

فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ﴿٩﴾ فَاَوْحٰٓى اِلٰى عَبْدِهٖ مَآ اَوْحٰى ﴿١٠﴾

10	जो उस ने वहि की	अपना बन्दा	तरफ़	तो उस ने वहि की	9	या उस से कम	दो किनारे	कमान	तो वह था (रह गई)

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ﴿١١﴾ اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ﴿١٢﴾ وَلَقَدْ رَاٰهُ

और तहक़ीक़ उस ने देखा उसे	12	जो उस ने देखा	पर	तो क्या तुम झगड़ते हो उस से	11	जो उस ने देखा	दिल	न झूट कहा

نَزْلَةً اُخْرٰى ﴿١٣﴾ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ﴿١٤﴾ عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ﴿١٥﴾

15	जन्नतुल मावा	उस के नज़्दीक	14	सिदरतुल मुन्तहा	नज़्दीक	13	दूसरी मरतबा

اِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ﴿١٦﴾ مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ﴿١٧﴾

17	और न हद से बढ़ी	आँख	न कजी की	16	जो छा रहा था	सिदरह	जब छा रहा था

لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى ﴿١٨﴾ اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى ﴿١٩﴾

19	और उज़्ज़ा	लात	तो क्या तुम ने देखा?	18	बड़ी	अपना रब	निशानियां	से	तहक़ीक़ उस ने देखी

وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى ﴿٢٠﴾ اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ﴿٢١﴾

21	औरतें	और उस के लिए	मर्द	क्या तुम्हारे लिए	20	तीसरी एक और	और मनात

تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى ﴿٢٢﴾ اِنْ هِيَ اِلَّآ اَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ

तुम	तुम ने वह नाम रख लिए हैं	मगर-सिर्फ़ नाम	यह	नहीं	22	बेढंगी	यह बांट तक़्सीम	यह

وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ

वह नहीं पैरवी करते	सनद	कोई	उस की	नहीं उतारी अल्लाह ने	और तुम्हारे बाप दादा

اِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْاَنْفُسُ ۚ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنْ رَّبِّهِمُ

उन के रब से	और (हालांकि) पहुँच चुकी उन के पास	नफ़्स (जमा)	और जो ख़्वाहिश	मगर-सिर्फ़ गुमान

ع ١ ٢٥ ٥ الْهُدٰى ﴿٢٣﴾ اَمْ لِلْاِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى ﴿٢٤﴾ فَلِلّٰهِ الْاٰخِرَةُ وَالْاُوْلٰى ﴿٢٥﴾

25	और दुनिया	पस अल्लाह ही के लिए आख़िरत	24	जिस की वह तमन्ना करे	इन्सान के लिए	क्या	23	हिदायत

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
सितारे की क़सम! जब वह ग़ाइब होने लगे। (1)
तुम्हारे रफ़ीक़ (मुहम्मद स) न बहके और न वह भटके। (2)
और वह अपनी ख़्वाहिश से बात नहीं करते। (3)
वह सिर्फ़ वहि है जो भेजी जाती है। (4)
उस को सिखाया उस सख़्त क़ुव्वत वाले, ताक़तों वाले (फ़रिश्ते) ने। (5)
फिर उस ने क़स्द किया (रसूल स के सामने आया)। (6)
और वह बुलन्द किनारे पर था। (7)
फिर वह नज़्दीक हुआ, फिर और नज़्दीक हुआ। (8)
तो वह कमान के दो किनारों के (फ़ासिले के) बराबर रह गया या उस से भी कम। (9)
तो उस ने वहि की अपने बन्दे की तरफ़ जो वहि की। (10)
जो उस ने (आँखों से) देखा (उस के) दिल ने तस्दीक़ की। (11)
क्या जो उस ने देखा तुम उस से उस पर झगड़ते हो? (12)
और तहक़ीक़ उस ने उसे दूसरी मरतबा देखा। (13)
सिदरतुल मुन्तहा के नज़्दीक। (14)
उस के नज़्दीक जन्नतुल मावा (आरामगाहे बहिश्त) है। (15)
जब सिदरह पर छा रहा था जो छा रहा था। (16)
आँख ने न कजी की और न वह हद से बढ़ी। (17)
तहक़ीक़ उस ने अपने रब की बड़ी निशानियां देखीं। (18)
क्या तुम ने देखा है लात और उज़्ज़ा, (19)
और तीसरी एक और मनात को? (20)
क्या तुम्हारे लिए मर्द (बेटे) हैं और उस के लिए औरतें (बेटियां)? (21)
यह बांट तक़्सीम बेढंगी है। (22)
यह (कुछ) नहीं सिर्फ़ नाम हैं जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं, अल्लाह ने नहीं उतारी उस की कोई सनद, वह नहीं पैरवी करते मगर सिर्फ़ गुमान और ख़्वाहिशे नफ़्स की, हालांकि उन के रब की तरफ़ से उन के पास हिदायत पहुँच चुकी है। (23)
क्या इन्सान के लिए वह जो तमन्ना करे? (24)
पस अल्लाह ही के लिए आख़िरत और दुनिया। (25)

और आस्मानों में कितने ही फ़रिश्ते हैं जिन की सिफ़ारिश कुछ भी नफ़ा नहीं देती मगर उस के बाद कि इजाज़त दे अल्लाह जिस के लिए चाहे और पसंद फ़रमाए। (26)
बेशक जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वह अलबत्ता फ़रिश्तों के नाम औरतों जैसे रखते हैं। (27)
और उन्हें उस का कोई इल्म नहीं, वह सिर्फ़ गुमान की पैरवी करते हैं, और गुमान यक़ीन के मुक़ाबले में कुछ नफ़ा नहीं देता। (28)
पस आप (स) उस से मुँह फेर लें जो हमारी याद से रूगर्दां हुआ, और वह न चाहता हो सिवाए दुनिया की ज़िन्दगी। (29)
यह उन के इल्म की रसाई (हद) है, बेशक तेरा रब उसे ख़ूब जानता है जो उस के रास्ते से गुमराह हुआ और वह उसे ख़ूब जानता है जिस ने हिदायत पाई। (30)
और अल्लाह ही के लिए है जो कुछ आस्मानों और जो ज़मीन में है ताकि जिन लोगों ने बुराई की उन्हें उन के आमाल का बदला दे, और उन्हें जज़ा दे जिन लोगों ने भलाई के साथ नेकी की। (31)
जो छोटे गुनाहों के सिवा बड़े गुनाहों और बेहयाइयों से बचते हैं, बेशक तुम्हारा रब वसीअ़ मग़फ़िरत वाला है, वह तुम्हें ख़ूब जानता है जब उस ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया और जब तुम अपनी माँओं के पेटों में बच्चे थे, पस तुम अपने आप को पाकीज़ा न समझो, वह उसे ख़ूब जानता है जिस ने परहेज़गारी की। (32)
तो क्या तू ने देखा उस को जिस ने रूगर्दानी की। (33)
और थोड़ा (माल) दिया और (फिर) बन्द कर दिया। (34)
क्या उस के पास इल्मे ग़ैब है? तो वह देख रहा है। (35)
क्या वह ख़बर नहीं दिया गया (क्या उसे ख़बर नहीं) जो मूसा (अ) के सहीफ़ों में है। (36)
और इब्राहीम (अ) जिस ने (अपना क़ौल) पूरा किया। (37)
कोई बोझ उठाने वाला नहीं उठाता किसी दूसरे का बोझ। (38)
और यह कि किसी इन्सान के लिए नहीं (किसी को नहीं मिलता) मगर उसी क़द्र जितनी उस ने कोशिश की, (39)

وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا اِلَّا

मगर	कुछ	उन की सिफ़ारिश	नफ़ा नहीं देती	आस्मानों में	फ़रिश्तों से	और कितने

مِنْۢ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى ﴿٢٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

ईमान नहीं रखते	जो लोग	बेशक	26	और वह पसंद फ़रमाए	जिस के लिए चाहे वह	इजाज़त दे अल्लाह	कि	उस के बाद

بِالْاٰخِرَةِ لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْاُنْثٰى ﴿٢٧﴾ وَمَا لَهُمْ بِهٖ

उस का	और नहीं उन्हें	27	औरतों जैसा	नाम	फ़रिश्तों	अलबत्ता वह रखते हैं नाम	आख़िरत पर

مِنْ عِلْمٍ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ ۚ وَاِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ

यक़ीन से-मुक़ाबला	नफ़ा नहीं देता	और बेशक गुमान	मगर-सिर्फ़ गुमान	वह पैरवी करते	नहीं	कोई इल्म

شَيْـًٔا ﴿٢٨﴾ فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۙ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا

सिवाए	और वह न चाहता हो	हमारी याद से	रूगर्दां हुआ	जो	से	पस मुँह फेर लें	28	कुछ

الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ

वह ख़ूब जानता है	तेरा रब	बेशक	इल्म की	उन की रसाई	यह	29	दुनिया की ज़िन्दगी

بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ﴿٣٠﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي

में	और अल्लाह के लिए जो	30	हिदायत पाई	उसे-जिस	ख़ूब जानता है	और वह	उस के रास्ते से	गुमराह हुआ	उसे जो

السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوْا بِمَا عَمِلُوْا

उस की जो उन्हें ने किए (आमाल)	बुराई की	उन्हें जिन्हों ने	ताकि वह बदला दे	ज़मीन में	और जो	आस्मानों

وَيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ﴿٣١﴾ اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ

कबीरा (बड़े) गुनाहों से	वह बचते हैं	जो लोग	31	भलाई के साथ	नेकी की	उन लोगों को जिन्हों ने	और जज़ा दे

وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ

जब	तुम्हें	और ख़ूब जानता है वह	वसीअ़ मग़फ़िरत वाला	तुम्हारा रब	बेशक	छोटे गुनाह	मगर-सिवाए	और बेहयाइयों

اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْٓا

पस पाकीज़ा न समझो	अपनी माँएं	पेट (जमा)	में	बच्चे	तुम	और जब	ज़मीन से	उस ने पैदा किया तुम्हें

اَنْفُسَكُمْ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ﴿٣٢﴾ اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ تَوَلّٰى ﴿٣٣﴾ وَاَعْطٰى

और उस ने दिया	33	जिस ने रूगर्दानी की	तो क्या तू ने देखा	32	परहेज़गारी की	उसे जो-जिस	वह ख़ूब जानता है	अपने आप

قَلِيْلًا وَّاَكْدٰى ﴿٣٤﴾ اَعِنْدَهٗ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرٰى ﴿٣٥﴾ اَمْ لَمْ يُنَبَّاْ

वह ख़बर नहीं दिया गया	क्या	35	तो वह देख रहा है	इल्मे ग़ैब	क्या उस के पास	34	और उस ने बन्द कर दिया	थोड़ा सा

بِمَا فِيْ صُحُفِ مُوْسٰى ﴿٣٦﴾ وَاِبْرٰهِيْمَ الَّذِيْ وَفّٰٓى ﴿٣٧﴾ اَلَّا تَزِرُ

कि नहीं उठाता	37	वफ़ा किया	वह जो-जिस	और इब्राहीम (अ)	36	मूसा (अ)	सहीफ़े	में	वह जो

وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ﴿٣٨﴾ وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ﴿٣٩﴾

39	जो उस ने कोशिश की	मगर	किसी इन्सान के लिए	नहीं	और यह कि	38	किसी दूसरे का बोझ	कोई बोझ उठाने वाला

وَاَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ يُرٰى ﴿٤٠﴾ ثُمَّ يُجْزٰىهُ الْجَزَآءَ الْاَوْفٰى ﴿٤١﴾ وَاَنَّ اِلٰى

और यह कि तरफ़	41	बदला पूरा पूरा	उसे बदला दिया जाएगा	फिर	40	अनक़रीब देखी जाएगी	उस की कोशिश	और यह कि

رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ﴿٤٢﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَاَبْكٰى ﴿٤٣﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ

वही मारता है	और बेशक वह	43	और वह रुलाता है	वही हँसाता है	और बेशक	42	इन्तिहा	तुम्हारा रब

وَاَحْيَا ﴿٤٤﴾ وَاَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿٤٥﴾ مِنْ نُّطْفَةٍ

नुत्फ़े से	45	और औरत	मर्द	जोड़े	उस ने पैदा किए	और बेशक वह	44	और जिलाता है

اِذَا تُمْنٰى ﴿٤٦﴾ وَاَنَّ عَلَيْهِ النَّشْاَةَ الْاُخْرٰى ﴿٤٧﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى

उस ने ग़नी किया	वही	और बेशक वह	47	दोबारा	(जी) उठाना	उसी पर	और यह कि	46	जब वह डाला जाता

وَاَقْنٰى ﴿٤٨﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ رَبُّ الشِّعْرٰى ﴿٤٩﴾ وَاَنَّهٗٓ اَهْلَكَ عَادَا ۨالْاُوْلٰى ﴿٥٠﴾

50	आद पहली (क़दीम)	उस ने हलाक किया	और बेशक वह	49	शिअ़रा (सितारे) का रब	और बेशक वही	48	और सरमायादार किया

وَثَمُوْدَاۡ فَمَآ اَبْقٰى ﴿٥١﴾ وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا هُمْ اَظْلَمَ

बड़े ज़ालिम	वह	वह थे	बेशक वह	उस से क़ब्ल	और क़ौमे नूह (अ)	51	पस उस ने बाक़ी न छोड़ा	और समूद

وَاَطْغٰى ﴿٥٢﴾ وَالْمُؤْتَفِكَةَ اَهْوٰى ﴿٥٣﴾ فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى ﴿٥٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

नेमत	पस किस	54	जिस ने ढांप लिया	तो उस को ढांप लिया	53	दे मारा	और उलटने वाली बस्तियां	52	और बहुत सरकश

رَبِّكَ تَتَمَارٰى ﴿٥٥﴾ هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى ﴿٥٦﴾ اَزِفَتِ

क़रीब आ गई	56	पहले डराने वाले	से	एक डराने वाला	यह	55	तू शक करेगा	अपना रब

الْاٰزِفَةُ ﴿٥٧﴾ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ﴿٥٨﴾ اَفَمِنْ

तो क्या-से	58	कोई खोलने वाला	अल्लाह के सिवा	उस के लिए उस का	नहीं	57	क़रीब आने वाली

هٰذَا الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ ﴿٦٠﴾

60	और तुम नहीं रोते	और तुम हँसते हो	59	तुम तअ़ज्जुब करते हो	इस बात

ع ٣/٢٠ — السجدة ١٢

وَاَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ ﴿٦١﴾ فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ﴿٦٢﴾ السجدة

62	अल्लाह के आगे और उस की इबादत करो	पस तुम सिजदा करो	61	ग़फ़लत करते (ग़ाफ़िल) हो	और तुम

آيَاتُهَا ٥٥ ❀ (٥٤) سُوْرَةُ الْقَمَرِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकूआत 3 — (54) सूरतुल क़मर — चाँद — आयात 55

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ﴿١﴾ وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا

और वह कहते हैं	वह मुँह फेर लेते हैं	कोई निशानी	और अगर वह देखते हैं	1	चाँद	और शक़ हो गया	क़ियामत	क़रीब आ गई

سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ﴿٢﴾ وَكَذَّبُوْا وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ وَكُلُّ اَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣﴾

3	वक़्त मुक़र्रर	और हर काम	अपनी ख़्वाहिशात	और पैरवी की	और उन्हों ने झुटलाया	2	(हमेशा) से होता चला आया	जादू

और यह कि उस की कोशिश अ़नक़रीब देखी जाएगी। (40) फिर उसे पूरा पूरा बदला दिया जाएगा। (41) और यह कि तुम्हारे रब (ही) की तरफ़ इन्तिहा है। (42) और बेशक वही हँसाता और रुलाता है। (43) और बेशक वही मारता और जिलाता है। (44) और बेशक वही जिस ने मर्द और औ़रत के जोड़े पैदा किए। (45) नुत्फ़े से, जब वह (रहम में) डाला जाता है, (46) और यह कि उसी पर (उसी के ज़िम्मे है) दोबारा जी उठाना। (47) और बेशक उस ने ग़नी किया और सरमायादार किया। (48) और बेशक वही शिअ़रा सितारे का रब है। (49) और बेशक उस ने क़दीम आ़द को हलाक किया, (50) और समूद को, पस उस ने बाक़ी न छोड़ा। (51) और क़ौमे नूह (अ) को उस से क़ब्ल, बेशक वह बड़े ज़ालिम और बहुत सरकश थे। (52) और (क़ौमे लूत अ की) उलटने वाली बस्तियों को दे मारा। (53) तो उस को ढांप लिया जिस ने ढांप लिया। (54) पस तू अपने रब की किस किस नेमत में शक करेगा! (55) यह पहले डराने वालों में से एक डराने वाला। (56) क़रीब आने वाली (क़ियामत) क़रीब आ गई। (57) अल्लाह के सिवा उस का कोई खोलने वाला नहीं। (58) तो क्या तुम उस बात से तअ़ज्जुब करते हो? (59) और तुम हँसते हो और तुम रोते नहीं। (60) और गा बजा कर टालते हो। (61) पस तुम अल्लाह के आगे सिजदा करो और तुम उस की इबादत करो। (62)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़ियामत क़रीब आ गई और चाँद शक़ हो गया। (1) और अगर वह कोई निशानी देखते हैं तो मुँह फेर लेते हैं और कहते हैं कि (यह) हमेशा से होता चला आया जादू है। (2) और उन्हों ने झुटलाया और अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी की, और हर काम के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है। (3)

وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ الْاَنْۢبَآءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ ۙ﴿٤﴾ حِكْمَةٌۢ بَالِغَةٌ

हिक्मते वालिग़ा (कामिल दानिशमन्दी)	4	डांट (इब्रत)	जिस में	ख़बरें (जमा)	से	और तहक़ीक़ आ गई उन के पास

فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ ۙ﴿٥﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۘ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ اِلٰى شَيْءٍ نُّكُرٍ ۙ﴿٦﴾

6	शै नागवार	तरफ़	बुलाएगा एक बुलाने वाला	जिस दिन	उन से	सो तुम मुँह फेर लो	5	डराने वाले	तो न फ़ाइदा दिया

وقف لازم

خُشَّعًا اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ۙ﴿٧﴾

7	परागन्दा	टिड्डियां	गोया कि वह	क़ब्रों से	वह निकलेंगे	उन की आँखें	झुकी हुई

مُّهْطِعِيْنَ اِلَى الدَّاعِ ؕ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ﴿٨﴾ كَذَّبَتْ

झुटलाया	8	बड़ा सख़्त दिन	यह	काफ़िर (जमा)	कहेंगे	पुकारने वाले की तरफ़	लपकते हुए

قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ وَّازْدُجِرَ ﴿٩﴾

9	और डराया धमकाया गया	दीवाना	और उन्हों ने कहा	हमारे बन्दे	तो उन्हों ने झुटलाया	क़ौमे नूह	इन से क़ब्ल

فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ﴿١٠﴾ فَفَتَحْنَاۤ اَبْوَابَ السَّمَآءِ

आस्मान के दरवाज़े	तो हम ने खोल दिए	10	पस मेरी मदद कर	मग़लूब	कि मैं	अपना रब	पस उस ने पुकारा

بِمَآءٍ مُّنْهَمِرٍ ۖ﴿١١﴾ وَّفَجَّرْنَا الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلٰۤى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۚ﴿١٢﴾

12	(जो) मुक़र्रर हो चुका था	उस काम पर	पानी	पस मिल गया	चश्मे	ज़मीन	और हम ने जारी कर दिए	11	कस्रत से बरसने वाले पानी से

وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ۙ﴿١٣﴾ تَجْرِيْ بِاَعْيُنِنَا جَزَآءً لِّمَنْ

उस के लिए जिस	बदला	हमारी आँखों के सामने	चलती थी	13	और कीलों वाली	तख़्तों वाली	पर	और हम ने सवार किया उसे

كَانَ كُفِرَ ﴿١٤﴾ وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَاۤ اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿١٥﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ

मेरा अ़ज़ाब	पस कैसा हुआ	15	कोई नसीहत पकड़ने वाला	तो क्या है	एक निशानी	और तहक़ीक़ हम ने उसे रहने दिया	14	नाक़द्री की गई

وَنُذُرِ ﴿١٦﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿١٧﴾ كَذَّبَتْ

झुटलाया	17	कोई नसीहत पकड़ने वाला?	तो क्या है	नसीहत के लिए	क़ुरआन	और तहक़ीक़ हम ने आसान किया	16	और मेरा डराना

عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿١٨﴾ اِنَّاۤ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا

तेज़	हवा	उन पर	बेशक हम ने भेजी	18	और मेरा डराना	मेरा अ़ज़ाब	हुआ	तो कैसा	आद

فِيْ يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ۙ﴿١٩﴾ تَنْزِعُ النَّاسَ ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ

तने	गोया कि वह	लोग	वह उखाड़ देती (फेंकती)	19	चलती ही गई	नहूसत के दिन	में

نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ﴿٢٠﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٢١﴾ وَلَقَدْ

और अलबत्ता तहक़ीक़	21	और मेरा डराना	मेरा अ़ज़ाब	हुआ	सो कैसा	20	जड़ से उखड़ी हुई खजूर के पेड़

يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۚ﴿٢٢﴾ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِالنُّذُرِ ﴿٢٣﴾

ع ١ ٢٢ ٨

23	डराने वालों को	झुटलाया समूद ने	22	कोई नसीहत हासिल करने वाला	तो क्या है	नसीहत के लिए	हम ने आसान कर दिया क़ुरआन

فَقَالُوْۤا اَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٢٤﴾

24	और दीवानगी	अलबत्ता गुमराही में	बेशक हम उस सूरत में	हम पैरवी करें उस की	एक	अपने में से	क्या एक बशर	पस उन्हों ने कहा

और तहक़ीक़ उन के पास आ गई (वह) ख़बरें जिन में इब्रत है। (4)
कामिल दानिशमन्दी की बातें, पस उन्हें डराने वालों ने फ़ाइदा न दिया। (5)
सो तुम उन से मुँह फेर लो, जिस दिन बुलाएगा एक बुलाने वाला (फ़रिश्ता) नागवार शै की तरफ़। (6)
उन की आँखें झुकी हुई (होंगी), वह क़ब्रों से (इस तरह) निकलेंगे गोया कि वह परागन्दा टिड्डियां हैं। (7)
पुकारने वाले की तरफ़ लपकते हुए काफ़िर कहेंगेः यह बड़ा सख़्त दिन है। (8)
झुटलाया इन से क़ब्ल क़ौमे नूह (अ) ने, पस उन्हों ने हमारे बन्दे (नूह अ) को झुटलाया और उन्हों ने कहाः दीवाना, और उसे डराया धमकाया। (9)
पस उस ने अपने रब को पुकारा कि मैं मग़लूब हो चुका, पस तू मेरी मदद कर। (10)
तो हम ने कस्रत से बरसने वाले पानी से आस्मान के दरवाज़े खोल दिए। (11)
और ज़मीन से चश्मे जारी कर दिए, पस (ज़मीन आस्मान का) पानी उस काम पर मिल गया जो (इल्मे इलाही में) मुक़र्रर हो चुका था (क़ौमे नूह अ की ग़रक़ाबी के लिए)। (12)
और हम ने उसे तख़्तों और कीलों वाली (कश्ती पर) सवार किया। (13)
हमारी आँखों के सामने (हमारी निगरानी में) चलती थी उस के बदले के लिए जिस की नाक़द्री की गई। (14)
और तहक़ीक़ हम ने उसे (बतौर) निशानी रहने दिया। तो क्या है कोई नसीहत पकड़ने वाला? (15)
पस (देखो कि) कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब और मेरा डराना। (16)
और तहक़ीक़ हम ने नसीहत के लिए क़ुरआन को आसान कर दिया तो क्या है कोई नसीहत पकड़ने वाला? (17)
आद ने झुटलाया तो कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब और मेरा डराना? (18)
हम ने नहूसत के दिन में उन पर तुन्द ओ तेज़ हवा भेजी (जो) चलती ही गई। (19)
वह लोगों को उखाड़ फेंकती थी गोया कि वह जड़ से उखड़े हुए खजूर के तने हैं। (20)
सो कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब और मेरा डराना? (21)
और तहक़ीक़ हम ने नसीहत के लिए क़ुरआन को आसान कर दिया तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला? (22)
समूद ने डराने वालों (रसूलों) को झुटलाया। (23)
पस उन्हों ने कहाः क्या हम अपने में से एक बशर की पैरवी करें? बेशक उस सूरत में हम अलबत्ता गुमराही और दीवानगी में होंगे। (24)

ءَاُلْقِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنۢ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ اَشِرٌ ﴿٢٥﴾ سَيَعْلَمُوْنَ

वह जल्द जान लेंगे	25	ख़ुद पसंद	बड़ा झूटा	बल्कि वह	हमारे दरमियान (हम में से)	उस पर	क्या डाला (नाज़िल किया) गया ज़िक्र (वहि)

غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْاَشِرُ ﴿٢٦﴾ اِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ

उन के लिए	आज़माइश	ऊँटनी	भेजने वाले	बेशक हम	26	ख़ुद पसंद	बड़ा झूटा	कौन	कल

فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ﴿٢٧﴾ وَنَبِّئْهُمْ اَنَّ الْمَآءَ قِسْمَةٌۢ بَيْنَهُمْ ۚ

उन के दरमियान	तक़सीम कर दिया गया	कि पानी	और उन्हें ख़बर दे	27	और सब्र कर	सो तू इन्तिज़ार कर उन का

كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ﴿٢٨﴾ فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطٰى فَعَقَرَ ﴿٢٩﴾

29	और कूंचें काट दीं	सो उस ने दस्त दराज़ी की	अपने साथी को	तो उन्हों ने पुकारा	28	हाज़िर किया गया (हाज़िर होना)	पीने की बारी	हर

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٣٠﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً

चिंघाड़	उन पर	बेशक हम ने भेजी	30	और मेरा डराना	मेरा अ़ज़ाब	हुआ	तो कैसा

وَّاحِدَةً فَكَانُوْا كَهَشِيْمِ الْمُحْتَظِرِ ﴿٣١﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ

नसीहत के लिए	हम ने आसान किया क़ुरआन	और अलबत्ता तहक़ीक़	31	तरह सूखी रौन्दी हुई बाड़, बाड़ लगाने वाला	सो वह हो गए	एक

فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٣٢﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطٍۭ بِالنُّذُرِ ﴿٣٣﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنَا

हम ने भेजी	बेशक हम	33	डराने वाले (रसूल)	लूत (अ) की क़ौम ने	झुटलाया	32	कोई नसीहत हासिल करने वाला	तो क्या है

عَلَيْهِمْ حَاصِبًا اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ ۭ نَجَّيْنٰهُمْ بِسَحَرٍ ﴿٣٤﴾ نِّعْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا ۭ

अपनी तरफ़ से	फ़ज़्ल फ़रमा कर	34	सुबह सवेरे	हम ने बचा लिया उन्हें	सिवाए लूत के अहले ख़ाना	पत्थर बरसाने वाली आन्धी	उन पर

كَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ شَكَرَ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ اَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا

तो वह झगड़ने लगे	हमारी पकड़ से	और तहक़ीक़ (लूत अ ने) उन्हें डराया	35	जो शुक्र करे	हम जज़ा देते हैं	इसी तरह

بِالنُّذُرِ ﴿٣٦﴾ وَلَقَدْ رَاوَدُوْهُ عَنْ ضَيْفِهٖ فَطَمَسْنَآ اَعْيُنَهُمْ فَذُوْقُوْا

पस चखो तुम	उन की आँखें	तो हम ने मिटा दीं	उस के मेहमान	से	और अलबत्ता तहक़ीक़ उन्हों ने (लूत अ से) लेना चाहा	36	डराने में

عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣٨﴾ فَذُوْقُوْا

पस चखो तुम	38	ठहरने वाली (दाइमी)	अ़ज़ाब	सवेरे	सुबह आन पड़ा उन पर	और तहक़ीक़	37	और मेरा डराना	मेरा अ़ज़ाब

ع ٢ ١٨ ٩ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٣٩﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٤٠﴾

40	कोई नसीहत हासिल करने वाला	तो क्या है	नसीहत के लिए	क़ुरआन	और अलबत्ता तहक़ीक़ हम ने आसान किया	39	और मेरा डराना	मेरा अ़ज़ाब

وَلَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ﴿٤١﴾ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا

तमाम	हमारी आयतों को	उन्हों ने झुटलाया	41	डराने वाले (रसूल)	फ़िरऔन वाले	और तहक़ीक़ आए

فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٤٢﴾ اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ

उन से	बेहतर	क्या तुम्हारे काफ़िर	42	साहिबे क़ुदरत	ग़ालिब	पकड़	पस हम ने उन्हें आ पकड़ा

اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِي الزُّبُرِ ﴿٤٣﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ﴿٤٤﴾

44	अपना बचाव कर लेने वाले	जमाअ़त	हम	वह कहते हैं	क्या	43	सहीफ़ों में	या तुम्हारे लिए नजात (माफ़ी नामा)

क्या हमारे दरमियान उस पर वहि नाज़िल की गई? (नहीं) बल्कि वह बड़ा झूटा, ख़ुद पसंद है। (25)
वह कल (जल्द ही) जान लेंगे कि कौन बड़ा झूटा, ख़ुद पसंद है। (26)
(ऐ सालेह अ) बेशक हम भेजने वाले हैं ऊँटनी उनकी आज़माइश के लिए, सो तू उन का (अनजाम देखने के लिए) इन्तिज़ार कर और सब्र कर। (27)
और उन्हें ख़बर दे कि पानी उन के दरमियान तक़सीम कर दिया गया है और हर एक को (अपनी) पीने की बारी पर हाज़िर होना है। (28)
तो उन्हों ने अपने साथी को पुकारा, सो उस ने दस्त दराज़ी की और (ऊँटनी) की कूंचें काट दीं। (29)
तो कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब और मेरा डराना? (30)
बेशक हम ने उन पर एक ही चिंघाड़ भेजी, सो वह हो गए बाड़े वाले की सूखी रौन्दी हुई बाड़ की तरह। (31)
और तहक़ीक़ हम ने नसीहत के लिए क़ुरआन को आसान कर दिया, तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला? (32)
लूत (अ) की क़ौम ने रसूलों को झुटलाया। (33)
(तो) बेशक हम ने उन पर पत्थर बरसाने वाली आन्धी भेजी, लूत (अ) के अहले ख़ाना के सिवा कि हम ने बचा लिया उन्हें सुबह सवेरे, (34)
अपनी तरफ़ से फ़ज़्ल फ़रमा कर, इसी तरह हम जज़ा देते हैं (उस को) जो शुक्र करे। (35)
और तहक़ीक़ (लूत अ) ने उन्हें हमारी पकड़ से डराया तो वह डराने में झगड़ने (शक करने) लगे। (36)
और तहक़ीक़ उन्हों ने लूत (अ) से उन के मेहमानों को (बुरे इरादे से) लेना चाहा तो हम ने उन की आँखें मिटा दीं (चौपट कर दीं), पस मेरे अ़ज़ाब और मेरे डराने (का मज़ा) चखो। (37)
और तहक़ीक़ सुबह सवेरे उन पर दाइमी अ़ज़ाब आ पड़ा। (38)
पस मेरे अ़ज़ाब और डराने (का मज़ा) चखो। (39)
और तहक़ीक़ हम ने क़ुरआन को आसान किया है नसीहत के लिए, तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला। (40)
और तहक़ीक़ क़ौमे फ़िरऔन के पास रसूल आए। (41)
उन्हों ने हमारी आयतों (अहकाम और निशानियों) को झुटलाया तमाम (की तमाम) तो हम ने उन्हें आ पकड़ा एक ग़ालिब और साहिबे क़ुदरत की पकड़ (की सूरत में)। (42)
क्या उन से तुम्हारे काफ़िर बेहतर हैं? या तुम्हारे लिए माफ़ी नामा है (क़दीम) सहीफ़ों में? (43)
क्या वह कहते हैं कि हम एक जमाअ़त अपना बचाव कर लेने वाले। (44)

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ﴿٤٥﴾ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ

और क़ियामत	वादागाह उन की	बल्कि क़ियामत	45	पीठ	और वह फेर लेंगे (भागें गे)	जमाअ़त	अ़नक़रीब शिकस्त खाएगी

اَدْهٰى وَاَمَرُّ ﴿٤٦﴾ اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ وقف لازم

वह घसीटे जाएंगे	जिस दिन	47	और जहालत	गुमराही में	बेशक मुज्रिम (जमा)	46	और बड़ी तल्ख़	वह सख़्त

فِي النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ﴿٤٨﴾ اِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنٰهُ

हम ने उसे पैदा किया	शै	बेशक हम हर	48	जहन्नम	लगना	तुम चखो	अपने मुँह (जमा)	पर-बल	जहन्नम में

بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾ وَمَآ اَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ﴿٥٠﴾ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَآ

और अलबत्ता हम हलाक कर चुके हैं	50	आँख का	जैसे झपकना	एक	मगर-सिर्फ़	और नहीं हमारा हुक्म	49	एक अन्दाज़े के मुताबिक़

اَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٥١﴾ وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوْهُ فِي الزُّبُرِ ﴿٥٢﴾

52	सहीफ़ों में	जो उन्हों ने की	और हर बात	51	कोई नसीहत हासिल करने वाला	तो क्या है	तुम जैसे

وَكُلُّ صَغِيْرٍ وَّكَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿٥٣﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَهَرٍ ﴿٥٤﴾

54	और नहरें	बाग़ात में	बेशक मुत्तक़ी (जमा)	53	लिखी हुई	और बड़ी	छोटी	और हर

فِيْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٥٥﴾ ع ١٥ ٣ ١٠

55	साहिबे क़ुदरत	बादशाह	नज़्दीक	सच्चाई का मुक़ाम	में

آيَاتُهَا ٧٨ ❀ (٥٥) سُوْرَةُ الرَّحْمٰنِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकूआत 3 — (55) सूरतुर रहमान — बेहद मेहरबान — आयात 78

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلرَّحْمٰنُ ﴿١﴾ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ﴿٢﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ﴿٣﴾ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ﴿٤﴾

4	उस ने उसे सिखाया बात करना	3	उस ने पैदा किया इन्सान	2	उस ने सिखाया क़ुरआन	1	रहमान (अल्लाह)

اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ﴿٥﴾ وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ﴿٦﴾ وَالسَّمَآءَ

और आस्मान	6	वह सिज्दा में (सर बसजूद हैं)	और दरख़्त	और झाड़ियां-तारे	5	एक हिसाब से	और चाँद	सूरज

رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ﴿٧﴾ اَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيْزَانِ ﴿٨﴾ وَاَقِيْمُوا

और क़ाइम करो	8	तराज़ू (तोल) में	हद से तजावुज़ करो	कि न	7	तराज़ू	और रखी	उस ने उसे बुलन्द किया

الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ﴿٩﴾ وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا

उस ने उस को रखा (बिछाया)	और ज़मीन	9	तोल	और न घटाओ	इंसाफ़ से	वज़्न (तोल)

لِلْاَنَامِ ﴿١٠﴾ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ﴿١١﴾ وَالْحَبُّ

और ग़ल्ला	11	ग़िलाफ़ वाले	और खजूरें	मेवे	उस में	10	मख़्लूक़ के लिए

ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ﴿١٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٣﴾

13	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	12	और ख़ुशबू के फूल	भूसे वाला

अ़नक़रीब यह जमाअ़त शिकस्त खाएगी और वह भागेंगे पीठ (फेर कर)। (45)
बल्कि क़ियामत उन की वादागाह है, और क़ियामत (की घड़ी) बहुत सख़्त और बड़ी तल्ख़ होगी। (46)
बेशक मुज्रिम गुमराही और जहालत में हैं। (47)
उस दिन वह अपने चेहरों के बल जहन्नम में घसीटे जाएंगे, (उन से कहा जाएगाः) तुम जहन्नम (की आग) लगने का मज़ा चखो। (48)
बेशक हम ने हर शै को एक अन्दाज़े के मुताबिक़ पैदा किया। (49)
और हमारा हुक्म सिर्फ़ एक (इशारा होता है) जैसे आँख का झपकना। (50)
और अलबत्ता हम हलाक कर चुके हैं तुम जैसे बहुत सों को, तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला? (51)
और जो कुछ उन्हों ने किया सहीफ़ों में है। (52)
और हर छोटी बड़ी (बात) लिखी हुई है। (53)
बेशक मुत्तक़ी बाग़ात और नहरों में होंगे। (54)
साहिबे क़ुदरत बादशाह के नज़्दीक सच्चाई के मुक़ाम में। (55)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
रहमान (अल्लाह)। (1)
उस ने क़ुरआन सिखाया। (2)
उस ने इन्सान को पैदा किया। (3)
उस ने उसे बात करना सिखाया। (4)
सूरज और चाँद एक हिसाब से (गर्दिश में हैं)। (5)
और तारे और दरख़्त सर बसजूद हैं। (6)
और उस ने आस्मान को बुलन्द किया और तराज़ू रखी। (7)
कि तुम तोल में हद से तजावुज़ न करो। (8)
और तोल इंसाफ़ से क़ाइम करो, और तोल न घटाओ (कम न तोलो)। (9)
और उस ने ज़मीन को मख़्लूक़ के लिए बिछाया। (10)
उस में मेवे हैं और ग़िलाफ़ वाली खजूरें हैं। (11)
और ग़ल्ला भूसे वाला, और ख़ुशबू के फूल। (12)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (13)

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۙ ﴿١٤﴾ وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ

शोला मारने वाली	जिन्नात	और उस ने पैदा किया	14	ठिकरी जैसी	खंखांती मिट्टी	से	उस ने पैदा किया इन्सान

مِّنْ نَّارٍ ۚ ﴿١٥﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٦﴾ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ

दोनों मश्रिक़ों	रब	16	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	15	आग से

وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۚ ﴿١٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٨﴾ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ

दो दर्या	उस ने बहाए	18	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	17	दोनों मग़रिब	और रब

يَلْتَقِيٰنِ ۙ ﴿١٩﴾ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ۚ ﴿٢٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢١﴾

21	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	20	वह ज़ियादती नहीं करते (नहीं मिलते)	एक आड़	उन दोनों के दरमियान	19	एक दूसरे से मिले हुए

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ۚ ﴿٢٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٣﴾

23	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	22	और मूंगे	मोती	उन दोनों से	निकलते हैं

النصف

وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَئٰتُ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ۚ ﴿٢٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

अपने रब	तो कौन सी नेमतों	24	पहाड़ों की तरह	दर्या में	चलने वाली	कश्तियां	और उस के लिए

ع ٢٥ ١ ١١

تُكَذِّبٰنِ ع ﴿٢٥﴾ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۚ صلے ﴿٢٦﴾ وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ

साहिबे अ़ज़मत	तेरा रब	चेहरा (ज़ात)	और बाक़ी रहेगा	26	फ़ना होने वाला	जो इस (ज़मीन) पर	हर कोई	25	तुम झुटलाओगे

وَالْاِكْرَامِ ۚ ﴿٢٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٨﴾ يَسْئَلُهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ

आस्मानों में	जो कोई	उस से मांगता है	28	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	27	एहसान करने वाला

وَالْاَرْضِ ط كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِيْ شَاْنٍ ۚ ﴿٢٩﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٠﴾

30	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	29	किसी न किसी काम में	वह	हर रोज़	और ज़मीन में

سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ۚ ﴿٣١﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٢﴾ يٰمَعْشَرَ

ऐ गिरोह	32	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	31	ऐ जिन ओ इन्स	तुम्हारी तरफ़	हम जल्द फ़ारिग़ (मुतवज्जुह) होते हैं

الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ

आस्मानों के किनारे	से	तुम निकल भागो	कि	तुम से हो सके	अगर	और इन्स	जिन्न

وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ط لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ۚ ﴿٣٣﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

तो कौन सी नेमतों	33	लेकिन ज़ोर से	तुम नहीं निकल सकोगे	तो निकल भागो	और ज़मीन

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٤﴾ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ

और धुआँ	आग से	एक शोला	तुम पर	भेज दिया जाएगा	34	तुम झुटलाओगे	अपने रब

فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ۚ ﴿٣٥﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٦﴾ فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ

आस्मान	फट जाएगा	फिर जब	36	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	35	तो मुक़ाबला न कर सकोगे

فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ۚ ﴿٣٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٨﴾

38	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	37	जैसे सुर्ख़ चमड़ा	गुलाबी	तो वह होगा

उस ने इन्सान को पैदा किया खंखंनाती
मिट्टी से ठिकरी जैसी। (14)
और जिन्नात को शोले वाली आग
से पैदा किया। (15)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों
को तुम झुटलाओगे? (16)
रब है दोनों मश्रिक़ों और दोनों
मग़रिबों का। (17)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों
को तुम झुटलाओगे? (18)
उस ने दो दर्या बहाए एक दूसरे से
मिले हुए। (19)
उन दोनों के दरमियान एक आड़ है,
वह (एक दूसरे से) नहीं मिलते। (20)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों
को तुम झुटलाओगे? (21)
उन दोनों से निकलते हैं मोती और
मूंगे। (22)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों
को तुम झुटलाओगे? (23)
और उसी के लिए हैं चलने वाली
कश्तियां दर्या में पहाड़ों की तरह। (24)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों
को तुम झुटलाओगे? (25)
ज़मीन पर जो कोई है फ़ना होने
वाला है। (26)
और बाक़ी रहेगी साहिबे अ़ज़मत एहसान
करने वाले तेरे रब की ज़ात। (27)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों
को तुम झुटलाओगे? (28)
जो कोई आस्मानों और ज़मीन में है, वह
उसी से मांगता है, वह हर रोज़ किसी न
किसी काम (नए हाल) में है। (29)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों
को तुम झुटलाओगे? (30)
ऐ जिन्न ओ इन्स! (सब से फ़ारिग़
हो कर) हम जल्द तुम्हारी तरफ़
मुतवज्जुह होते हैं। (31)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों
को तुम झुटलाओगे? (32)
ऐ गिरोहे जिन्न और इन्स, अगर तुम
से हो सके निकल भागने आस्मानों
और ज़मीन के किनारों से तो निकल
भागो, तुम नहीं निकल सकोगे, उस
के लिए बड़ा ज़ोर चाहिए। (33)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों
को तुम झुटलाओगे? (34)
तुम पर भेज दिया जाएगा एक
शोला आग से, और धुआँ, तो
मुक़ाबला न कर सकोगे। (35)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों
को तुम झुटलाओगे? (36)
फिर जब फट जाएगा आस्मान, तो वह
सुर्ख़ चमड़े जैसा गुलाबी हो जाएगा। (37)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों
को तुम झुटलाओगे? (38)

पस उस दिन न पूछा जाएगा उस के (अपने) गुनाहों के बारे में किसी इन्सान से और न जिन्न से। (39) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (40) मुजरिम पहचाने जाएंगे अपनी पेशानी से, फिर वह पेशानियों के (बालों) से और क़दमों से पकड़े जाएंगे। (41) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (42) यह है वह जहन्नम जिसे गुनाहगार झुटलाते थे। (43) वह उस के और खौलते हुए गर्म पानी के दरमियान फिरेंगे। (44) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (45) और जो अपने रब के हुज़ूर खड़ा होने से डरा, उस के लिए दो बाग़ हैं। (46) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे। (47) बहुत सी शाख़ों वाले। (48) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (49) (उन बाग़ों में) दो चश्मे जारी हैं। (50) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (51) उन दोनों (बाग़ों) में हर मेवे की दो, दो क़िस्में हैं। (52) तो कौन सी नेमतों को अपने रब की तुम झुटलाओगे? (53) फ़र्शों पर तकिया (लगाए होंगे) जिन के असतर रेशम के होंगे, और दोनों बाग़ों के मेवे नज़दीक होंगे। (54) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (55) उन में निगाहें नीची रखने वालियां हैं, उन्हें हाथ नहीं लगाया किसी इन्सान ने उन से क़ब्ल और न किसी जिन्न ने। (56) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (57) गोया वह याक़ूत और मूंगे हैं। (58) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (59) एहसान का बदला एहसान के सिवा और क्या हो सकता है। (60) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (61) और उन दोनों के अ़लावा दो बाग़ और भी हैं। (62) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (63) निहायत गहरे सब्ज़ रंग के। (64) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (65) उन दोनों (बाग़ात) में दो चश्मे हैं फ़ौवारों की तरह उबलते हुए। (66)

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْـَٔلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖٓ اِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ ﴿٣٩﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

अपने रब	तो कौन सी नेमतों	39	और न जिन्न	किसी इन्सान	उस के गुनाहों के मुतअ़ल्लिक़	न पूछा जाएगा	पस उस दिन

تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٠﴾ يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ

पेशानियों से	फिर वह पकड़े जाएंगे	अपनी पेशानी से	मुजरिम (जमा)	पहचाने जाएंगे	40	तुम झुटलाओगे

وَالْاَقْدَامِ ﴿٤١﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٢﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ يُكَذِّبُ

झुटलाते हैं	वह जिसे	जहन्नम	यह	42	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	41	और क़दमों

بِهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ يَطُوْفُوْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيْمٍ اٰنٍ ﴿٤٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

तो कौन सी नेमतों	44	खौलते हुए	गर्म पानी	और दरमियान	उस के दरमियान	वह फिरेंगे	43	उसे मुजरिम (जमा) गुनाहगार

وقف لازم

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٥﴾ وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿٤٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

ع ٢ ١٢

तो कौन सी नेमतों	46	दो बाग़	अपने रब के हुज़ूर खड़ा होना	जो डरा	और उस के लिए	45	तुम झुटलाओगे	अपने रब

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٧﴾ ذَوَاتَآ اَفْنَانٍ ﴿٤٨﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٩﴾ فِيْهِمَا

उन दोनों में	49	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	48	बहुत सी शाख़ों वाले	47	तुम झुटलाओगे	अपने रब

عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ﴿٥٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥١﴾ فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ

हर	से - की	उन दोनों में	51	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	50	जारी हैं	दो चश्मे

فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ﴿٥٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٣﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى فُرُشٍۭ

फ़र्शों पर	तकिया लगाए हुए	53	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	52	दो क़िस्में	मेवे

بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ؕ وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿٥٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

अपने रब	तो कौन सी नेमतों	54	नज़दीक	दोनों बाग़	और मेवे	रेशम के	उन के असतर

تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٥﴾ فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ

उन से क़ब्ल	इन्सान ने	उन्हें हाथ नहीं लगाया किसी	निगाहें	बन्द (नीचे) रखने वाली	उन में	55	तुम झुटलाओगे

وَلَا جَآنٌّ ﴿٥٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٧﴾ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٨﴾

58	और मूंगे	याक़ूत	गोया कि	57	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	56	और न किसी जिन्न

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٩﴾ هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا

सिवा	एहसान	क्या बदला	59	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों

الْاِحْسَانُ ﴿٦٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦١﴾ وَمِنْ دُوْنِهِمَا

और उन दोनों के अ़लावा	61	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	60	एहसान

جَنَّتٰنِ ﴿٦٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٣﴾ مُدْهَآمَّتٰنِ ﴿٦٤﴾

64	निहायत गहरे सब्ज़ रंग के	63	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	62	दो बाग़

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٥﴾ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ﴿٦٦﴾

66	बशिद्दत जोश मारने वाले	दो चश्मे	उन दोनों में	65	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٧﴾ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ﴿٦٨﴾

68	और अनार	खजूर के दरख़्त	मेवे	उन दोनों में	67	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٩﴾ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ﴿٧٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

तो कौन सी नेमतें	70	ख़ूबसूरत	ख़ूब सीरत	उन में	69	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतें

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧١﴾ حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿٧٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

अपने रब	तो कौन सी नेमतें	72	ख़ेमों में	रुकी रहने वाली (पर्दा नशीन)	हूरें	71	तुम झुटलाओगे	अपने रब

تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٣﴾ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٧٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

अपने रब	तो कौन सी नेमतें	74	और न किसी जिन्न	उन से क़ब्ल	किसी इन्सान	उन्हें हाथ नहीं लगाया	73	तुम झुटलाओगे

تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٥﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿٧٦﴾

76	नफ़ीस	और ख़ूबसूरत	सब्ज़	मस्नदों पर	तकिया लगाए हुए	75	तुम झुटलाओगे

ع ٣ ٤٣ ١٣
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٧﴾ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِى الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿٧٨﴾

78	और एहसान करने वाला	साहिबे जलाल	तुम्हारा रब	नाम	बरकत वाला	77	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतें

اٰيَاتُهَا ٩٦ ❀ سُوْرَةُ الْوَاقِعَةِ (٥٦) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकुआत 3 — (56) सूरतुल वाक़िआ वाक़े होनेवाली — आयात 96

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وقف لازم
اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١﴾ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ﴿٢﴾ خَافِضَةٌ

पस्त करने वाली	2	कुछ झूट	उस के वाक़े होने में	नहीं	1	वाक़े होने वाली	वाक़े हो जाएगी	जब

رَّافِعَةٌ ﴿٣﴾ اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا ﴿٤﴾ وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ﴿٥﴾

5	और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे पहाड़, रेज़ा रेज़ा हो कर	4	सख़्त ज़ल्ज़ला	ज़मीन	लरज़ने लगेगी	जब	3	बुलन्द करने वाली

فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْۢبَثًّا ﴿٦﴾ وَّكُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ﴿٧﴾ فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ

तो दाएं हाथ वाले	7	तीन	जोड़े (गिरोह)	और तुम हो जाओगे	6	परागन्दा	गुबार	फिर हो जाएंगे

مَآ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ﴿٨﴾ وَاَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ مَآ اَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ﴿٩﴾

9	बाएं हाथ वाले	क्या	और बाएं हाथ वाले	8	दाएं हाथ वाले	क्या

وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ﴿١٠﴾ اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿١١﴾ فِيْ جَنّٰتِ

बाग़ात	में	11	मुक़र्रब (जमा)	यही हैं	10	सबक़त ले जाने वाले हैं	और सबक़त ले जाने वाले

النَّعِيْمِ ﴿١٢﴾ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣﴾ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٤﴾

14	पिछलों से-में	और थोड़े	13	पहलों से-में	बड़ी जमाअत	12	नेमत

عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ﴿١٥﴾ مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ﴿١٦﴾

16	आमने सामने	उस पर	तकिया लगाए हुए	15	सोने के तारों से बुने हुए	तख़्तों पर

तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (67)
उन दोनों (बाग़ात) में मेवे औ खजूर के दरख़्त और अनार होंगे। (68)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (69)
उन में ख़ूब सीरत, ख़ूबसूरत (बीवियां) होंगी। (70)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (71)
ख़ेमों में पर्दा नशीन हूरें। (72)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (73)
और उन से क़ब्ल उन्हें हाथ नहीं लगाया किसी इन्सान ने और न किसी जिन्न ने। (74)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (75)
सब्ज़, ख़ूबसूरत, नफ़ीस मस्नदों पर तकिया लगाए हुए। (76)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (77)
तुम्हारे साहिबे जलाल, एहसान करने वाले रब का नाम बरकत वाला है। (78)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

जब वाक़े हो जाएगी वाक़े होने वाली (क़ियामत)। (1)
उस के वाक़े होने में कुछ झूट नहीं। (2)
(किसी को) पस्त करने वाली (किसी को) बुलन्द करने वाली। (3)
जब ज़मीन सख़्त ज़ल्ज़ले से लरज़ने लगेगी। (4)
और पहाड़ टूट फूट कर रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे। (5)
फिर परागन्दा ग़ुबार हो जाएंगे। (6)
और तुम हो जाओगे तीन गिरोह। (7)
तो दाएं हाथ वाले (सुबहानल्लाह) क्या हैं दाएं हाथ वाले! (8)
और बाएं हाथ वाले (अफ़्सोस) क्या हैं बाएं हाथ वाले! (9)
और सबक़त ले जाने वाले (माशा अल्लाह) सबक़त ले जाने वाले हैं! (10)
यही हैं (अल्लाह के) मुक़र्रब। (11)
नेमतों वाले बाग़ात में। (12)
बड़ी जमाअत पहलों में से। (13)
और थोड़े पिछलों में से। (14)
सोने के तारों से बुने हुए तख़्तों पर। (15)
तकिया लगाए हुए उस पर आमने सामने (बैठे हुए)। (16)

يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ﴿١٧﴾ بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ ۙ وَكَاْسٍ

और प्याले	और सुराहियां	कटोरों के साथ	17	हमेशा रहने वाले	लड़के	उन के	इर्द गिर्द फिरेंगे

مِّنْ مَّعِيْنٍ ﴿١٨﴾ لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ﴿١٩﴾ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا

उस से जो	और मेवे	19	और न उन की अक़्ल में फ़ुतूर आएगा	उस से	न उन्हें दर्द सर होगा	18	साफ़ शराब	से-के

يَتَخَيَّرُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٢١﴾ وَحُوْرٌ عِيْنٌ ﴿٢٢﴾ كَاَمْثَالِ

जैसे	22	और बड़ी आँखों वाली हूरें	21	वह चाहेंगे	वह जो	और परिन्दों का गोश्त	20	वह पसंद करेंगे

اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ﴿٢٣﴾ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا

उस में	वह न सुनेंगे	24	जो वह करते थे	उस की	जज़ा	23	(सीपी में) छुपे हुए	मोती

لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ﴿٢٥﴾ اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ﴿٢٦﴾ وَاَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۙ مَآ

क्या	और दाएं हाथ वाले	26	सलाम सलाम	कलाम	मगर	25	और न गुनाह की बात	बेहूदा बात

اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ﴿٢٧﴾ فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ﴿٢٨﴾ وَّطَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ﴿٢٩﴾ وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ﴿٣٠﴾

30	लमबा-दराज़	और साया	29	तह दर तह	और केले	28	बेख़ार वाली	बेरियों में	27	दाएं हाथ वाले

وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ﴿٣١﴾ وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ﴿٣٢﴾ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ ﴿٣٣﴾

33	और न कोई रोक टोक	न ख़तम होने वाला	32	कसीर	और मेवे	31	गिरता हुआ	और पानी

وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ﴿٣٤﴾ اِنَّآ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ﴿٣٥﴾ فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ﴿٣٦﴾

36	कुंवारी (जमा)	पस हम ने उन्हें बनाया	35	खूब उठान	उन्हें उठान दी	बेशक हम	34	ऊँचे	और फ़र्श (जमा)

ع ١ ٣٨ ١٣

عُرُبًا اَتْرَابًا ﴿٣٧﴾ لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٣٨﴾ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَثُلَّةٌ

और बहुत से	39	अगलों में से	बहुत से	38	दाएं हाथ वालों के लिए	37	महबूब हम उम्र

مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَاَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ فِيْ سَمُوْمٍ ﴿٤١﴾

गर्म हवा	में	41	बाएं हाथ वाले	क्या	और बाएं हाथ वाले	40	पिछलों में से

وَّحَمِيْمٍ ﴿٤٢﴾ وَّظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُوْمٍ ﴿٤٣﴾ لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ ﴿٤٤﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ

इस से क़ब्ल	थे	बेशक वह	44	और न फ़र्हत	न कोई ठंडक	43	धुआँ	से-के	और साया	42	और खौलता हुआ पानी

مُتْرَفِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ﴿٤٦﴾

46	गुनाह भारी	पर	अड़े हुए	और वह थे	45	नेमत में पले हुए

وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ ۙ اَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٤٧﴾ اَوَ اٰبَآؤُنَا

ओर क्या हमारे बाप दादा	47	ज़रूर दोबारा उठाए जाएंगे	क्या हम	और हड्डियां	मिट्टी	और हो गए	हम मर गए	क्या जब	और वह कहते थे

الْاَوَّلُوْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٩﴾ لَمَجْمُوْعُوْنَ ۙ اِلٰى

तरफ़-पर	ज़रूर जमा किए जाएंगे	49	और पिछले	पहले	बेशक	आप (स) कह दें	48	पहले

مِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٥٠﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ﴿٥١﴾

51	झुटलाने वाले	गुमराह लोग	ऐ	बेशक तुम	फिर	50	एक मुक़र्ररा दिन	वक़्त

उन के इर्द गिर्द लड़के फिरेंगे हमेशा (लड़के ही) रहने वाले। (17)
आबख़ोरों और सुराहियों के साथ और साफ़ शराब के पियालों (के साथ)। (18)
न उस से उन्हें दर्द सर होगा और न उन की अ़क़्लों में फ़ुतूर आएगा। (19)
और मेवे जो वह पसंद करेंगे। (20)
और परिन्दों का गोश्त जो वह चाहेंगे। (21)
और बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरें, (22)
जैसे मोती (के दाने) सीपी में छुपे हुए। (23)
उस की जज़ा जो वह करते थे। (24)
वह उस में न बेहूदा बात सुनेंगे और न गुनाह की बात। (25)
मगर "सलाम सलाम", मतलब कि ठीक ठीक बात होगी। (26)
और दाएं हाथ वाले (सुबहानल्लाह) क्या हैं दाएं हाथ वाले! (27)
बेरियों में बेख़ार वाली। (28)
और तह दर तह केले। (29)
और दराज़ साया। (30)
और गिरता हुआ पानी (झरने)। (31)
और कसीर मेवे। (32)
न (वह) ख़तम होंगे और न (उन्हें) कोई रोक टोक (होगी)। (33)
और ऊँचे ऊँचे फ़र्श। (34)
बेशक हम ने उन्हें खूब उठान दी। (35)
पस हम उन्हें कुंवारी बना देंगे, (36)
महबूब, हम उम्र। (37)
दाएं हाथ वालों के लिए। (38)
बहुत से अगलों मे से, (39)
और बहुत से पिछलों में से। (40)
और बाएं हाथ वाले (अफ़्सोस) क्या हैं बाएं हाथ वाले! (41)
गर्म हवा और खौलते हुए पानी में। (42)
और धुएँ के साए में। (43)
न कोई ठंडक और न कोई फ़र्हत। (44)
बेशक वह उस से क़ब्ल नेमत में पले हुए थे। (45)
और वह भारी गुनाह पर अड़े हुए थे। (46)
और वह कहते थेः क्या जब हम मर गए और (मिट्टी में मिल कर) मिट्टी हो गए और हड्डियां (हो गए) क्या हम दोबारा ज़रूर उठाए जाएंगे? (47)
क्या हमारे बाप दादा भी? (48)
आप (स) कह देंः बेशक पहले और पिछले। (49)
ज़रूर जमा किए जाएंगे एक दिन जिस का वक़्त मुक़र्रर है। (50)
फिर बेशक तुम ऐ झुटलाने वाले गुमराह लोगो! (51)

لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ﴿٥٢﴾ فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٥٣﴾

53	पेट (जमा)	उस से	फिर भरना होगा	52	थोहर का	दरख़्त	से	अलबत्ता खाने वाले

فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ﴿٥٤﴾ فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ﴿٥٥﴾

55	प्यासे ऊँट की तरह पीना	सो पीना होगा	54	खौलता हुआ पानी	से	उस पर	सो पीना होगा

هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٥٦﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ﴿٥٧﴾

57	तुम तस्दीक़ करते	सो क्यों नहीं	हम ने पैदा किया	56	रोज़े जज़ा	उन की मेहमानी	यह

اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ﴿٥٨﴾ ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٥٩﴾

59	पैदा करने वाले	हम	या	तुम उसे पैदा करते हो	क्या तुम	58	जो तुम डालते हो	भला तुम देखो तो

نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٦٠﴾ عَلٰٓى

पर	60	उस से आजिज़	और नहीं हम	मौत	तुम्हारे दरमियान	हम ने मुक़र्रर किया	हम

اَنْ نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ

और यक़ीनन तुम जान चुके हो	61	तुम नहीं जानते	जो	में	और हम पैदा कर दें तुम्हें	तुम जैसे	कि हम बदल दें

النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ﴿٦٣﴾ ءَاَنْتُمْ

क्या तुम	63	जो तुम बोते हो	भला तुम देखो तो	62	तुम ग़ौर करते	तो क्यों नहीं	पैदाइश पहली

تَزْرَعُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ﴿٦٤﴾ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا

रेज़ा रेज़ा	अलबत्ता हम उसे कर दें	अगर हम चाहें	64	काश्त करने वाले	हम	या	उस की काश्त करते हो

فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ﴿٦٥﴾ اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٦٧﴾

67	महरूम रह जाने वाले	हम	बल्कि	66	तावान पड़ जाने वाले	बेशक हम	65	बातें बनाते	फिर तुम हो जाओ

اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ ﴿٦٨﴾ ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ

से	तुम ने उसे उतारा	क्या तुम	68	तुम पीते हो	जो	पानी	भला तुम देखो तो

الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ﴿٦٩﴾ لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا

कड़वा	हम कर दें उसे	हम चाहें	अगर	69	उतारने वाले	या हम	बादल

فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِيْ تُوْرُوْنَ ﴿٧١﴾ ءَاَنْتُمْ

क्या तुम	71	तुम सुलगाते हो	जो	आग	भला तुम देखो तो	70	तो क्यों तुम शुक्र नहीं करते

اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَآ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِـُٔوْنَ ﴿٧٢﴾ نَحْنُ جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً

नसीहत	हम ने उसे बनाया	हम	72	पैदा करने वाले	या हम	उस के दरख़्त	तुम ने पैदा किए

ع ٢ ٣٦ ١٥ الثلثة

وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ﴿٧٣﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٧٤﴾

74	अ़ज़मत वाला	अपने रब	नाम से - की	पस तू पाकीज़गी बयान कर	73	हाजत मंदों के लिए	और सामान

فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ﴿٧٥﴾ وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ﴿٧٦﴾

76	बड़ी	अगर तुम जानो (ग़ौर करो)	एक क़सम है	और बेशक यह	75	सितारे (जमा)	मुक़ाम की	सो मैं क़सम खाता हूँ

अलबत्ता तुम थोहर के दरख़्त से खाने वाले हो। (52) पस उस से पेट भरना होगा। (53) सो उस पर पीना होगा खौलता हुआ पानी। (54) सो पीना होगा प्यासे ऊँट की तरह। (55) रोज़े जज़ा उन की यह मेहमानी होगी। (56) हम ने तुम्हें पैदा किया, सो तुम क्यों तस्दीक़ नहीं करते? (57) भला देखो तो! जो (नुत्फ़ा) तुम (औरतों के रह्म में) डालते हो। (58) क्या तुम उसे पैदा करते हो या हम हैं पैदा करने वाले? (59) हम ने तुम्हारे दरमियान मौत (का वक़्त) मुक़र्रर किया है, और हम उस से आजिज़ नहीं। (60) कि हम बदल दें तुम्हारी शक्लें और हम पैदा करदें तुम्हें (ऐसे आ़लम) में जिस को तुम नहीं जानते। (61) और यक़ीनन तुम जान चुके हो पहली पैदाइश तो तुम क्यों ग़ौर नहीं करते? (62) भला तुम देखो तो जो तुम बोते हो। (63) क्या तुम उस की काश्त करते हो या हम हैं काश्त करने वाले? (64) अगर हम चाहें तो अलबत्ता हम उसे कर दें रेज़ा रेज़ा, फिर तुम बातें बनाते रह जाओ। (65) (कि) बेशक हम तादान पड़ जाने वाले हो गए। (66) बल्कि हम महरूम रह जाने वाले हैं। (67) भला तुम देखो तो पानी जो तुम पीते हो। (68) क्या तुम ने उसे बादल से उतारा या हम हैं उतारने वाले? (69) अगर हम चाहें तो हम उसे कड़वा (खारी) कर दें, तो तुम क्यों शुक्र नहीं करते? (70) भला तुम देखो तो जो आग तुम सुलगाते हो, (71) क्या तुम ने उस के दरख़्त पैदा किए या हम हैं पैदा करने वाले? (72) हम ने उसे याद दिलाने वाली बनाया और मुसाफ़िरों के लिए सामाने ज़िन्दगी। (73) पस तू अपने अ़ज़मत वाले रब के नाम की पाकीज़गी बयान कर। (74) सो मैं सितारों के मुक़ाम की क़सम खाता हूँ। (75) और बेशक यह एक बड़ी क़सम है अगर तुम ग़ौर करो। (76)

بेशक यह क़ुरआन है गिरामी क़द्र। (77)
यह एक पोशीदा किताब (लौहे महफ़ूज़) में है। (78)
उसे हाथ नहीं लगाते सिवाए पाक लोग। (79)
तमाम जहानों के रब (की तरफ़) से उतारा हुआ। (80)
पस क्या तुम इस बात को यूँ ही टालने वाले? (81)
और तुम बनाते हो झुटलाने को अपना वज़ीफ़ा। (82)
फिर क्यों नहीं जब (किसी की जान) पहुँचती है हलक़ को, (83)
और उस वक़्त तुम तकते हो। (84)
और हम तुम से भी ज़ियादा उस के क़रीब (होते हैं) लेकिन तुम नहीं देखते। (85)
अगर तुम खुद मुख़्तार हो तो क्यों नहीं? (86)
तुम उसे (निकलती जान को) लौटा लेते अगर तुम सच्चे हो। (87)
पस जो (मरने वाला) अगर मुक़र्रब लोगों में से हो। (88)
तो (उस के लिए) राहत और ख़ुशबूदार फूल और नेमतों के बाग़ हैं। (89)
और अलबत्ता अगर वह दाएं हाथ वालों में से हो। (90)
पस तेरे लिए सलामती कि तू दाएं हाथ वालों से है। (91)
और अगर गुमराह, झुटलाने वालों में से हो। (92)
तो (उस की) मेहमानी खौलता हुआ पानी है, (93)
और दोज़ख़ में झोंका जाना। (94)
बेशक यह अलबत्ता यक़ीनी बात है। (95)
पस आप (स) पाकीज़गी बयान करें अपने अज़मत वाले रब के नाम की। (96)

اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٧﴾ فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ﴿٧٨﴾ لَّا يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ﴿٧٩﴾

79	सिवाए पाक	उसे हाथ नहीं लगाते	78	पोशीदा	एक किताब	में	77	क़ुरआन है गिरामी क़द्र	बेशक यह

تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾ اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ ﴿٨١﴾

81	यूँ ही टालने वाले	तुम	बात	तो क्या इस	80	तमाम जहानों	रब	से	उतारा हुआ

وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَلَوْلَآ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ﴿٨٣﴾

83	हलक़ को	पहुँचती है	जब	फिर क्यों नहीं	82	झुटलाते हो	कि तुम	अपना रिज़्क़ (वज़ीफ़ा)	और तुम बनाते हो

وَاَنْتُمْ حِيْنَىِٕذٍ تَنْظُرُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ

और लेकिन	तुम से	उस के	ज़ियादा क़रीब	और हम	84	तकते हो	उस वक़्त	और तुम

لَّا تُبْصِرُوْنَ ﴿٨٥﴾ فَلَوْلَآ اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ ﴿٨٦﴾ تَرْجِعُوْنَهَآ

तुम उसे लौटा लो	86	किसी के क़हर में न आने वाले (खुद मुख़्तार)	अगर तुम	तो क्यों नहीं	85	तुम नहीं देखते

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٨٧﴾ فَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٨٨﴾ فَرَوْحٌ

तो राहत	88	मुक़र्रब लोग	से	अगर हो	पस जो	87	सच्चे (जमा)	अगर तुम

وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ ﴿٨٩﴾ وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩٠﴾

90	दाएं हाथ वाले	से	अगर वह हो	और अलबत्ता	89	नेमतों के	और बाग़	और ख़ुशबूदार फूल

فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩١﴾ وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ

झुटलाने वालों	से	अगर वह हो	और अलबत्ता	91	दाएं हाथ वालों	से	तेरे लिए	तो सलामती

الضَّآلِّيْنَ ﴿٩٢﴾ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿٩٣﴾ وَّتَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ ﴿٩٤﴾ اِنَّ

बेशक	94	दोज़ख़	और उसे डाल देना	93	खौलता हुआ पानी	से	तो मेहमानी	92	गुमराह (जमा)

هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٩٥﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٩٦﴾

ع ٣ ٢٢ ١٦

96	अज़मत वाला	अपने रब	पस आप (स) पाकीज़गी बयान करें नाम की	95	यक़ीनी बात	अलबत्ता यह	यह

آيَاتُهَا ٢٩ ❀ سُوْرَةُ الْحَدِيْدِ (٥٧) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٤

रुकुआत 4 — (57) सूरतुल हदीद / लोहा — आयात 29

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١﴾ لَهٗ مُلْكُ

उस के लिए बादशाहत	1	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	पाकीज़गी से याद करता है अल्लाह को

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢﴾

2	क़ुदरत रखने वाला	हर शै	पर	और वह	और मौत देता है	वह ज़िन्दगी देता है	और ज़मीन	आस्मानों

هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٣﴾

3	खूब जानने वाला	हर शै को	और वह	और बातिन	और ज़ाहिर	और आख़िर	अव्वल	वही

هُوَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى

फिर उस ने क़रार पकड़ा	दिन	छः (6)	में	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया	जिस ने	वही

عَلَى الْعَرْشِ ؕ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِى الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ

और जो उतरता है	उस से	और जो निकलता है	ज़मीन	में	जो दाख़िल होता है	वह जानता है	अ़र्श पर

مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ؕ وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا

उसे जो	और अल्लाह	तुम हो	जहां कहीं	तुम्हारे साथ	और वह	उस में	और जो चढ़ता है	आस्मानों से

تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٤﴾ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ

लौटना	और अल्लाह की तरफ़	और ज़मीन	बादशाहत आस्मानों	उसी के लिए	4	देखने वाला	तुम करते हो

الْاُمُوْرُ ﴿٥﴾ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ ؕ وَهُوَ

और वह	रात में	दिन	और दाख़िल करता है	दिन में	रात	वह दाख़िल करता है	5	तमाम काम

عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٦﴾ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا

उस से जो	और ख़र्च करो	और उस के रसूल	अल्लाह पर	तुम ईमान लाओ	6	दिलों की बात को	जानने वाला

جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوْا

और उन्हों ने ख़र्च किया	तुम में से	वह ईमान लाए	पस जो लोग	उस में	जांनशीन	उस ने तुम्हें बनाया

لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿٧﴾ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ

वह तुम्हें बुलाते हैं	और रसूल	अल्लाह पर	तुम ईमान नहीं लाते	और क्या (हो गया है) तुम्हें	7	बड़ा अजर	उन के लिए

لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٨﴾

8	ईमान वाले	अगर तुम हो	तुम से अ़हद	और यक़ीनन वह ले चुका है	अपने रब पर	कि तुम ईमान लाओ

هُوَ الَّذِىْ يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖۤ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ

से	ताकि वह तुम्हें निकाले	वाज़ेह आयात	अपना बन्दा	पर	नाज़िल फ़रमाता है	वही है जो

الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩﴾

9	निहायत मेहरबान	शफ़क़त करने वाला	तुम पर	और बेशक अल्लाह	रोशनी की तरफ़	अन्धेरों से

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ

आस्मानों	और अल्लाह के लिए मीरास	अल्लाह का रास्ता	में	तुम ख़र्च नहीं करते	और क्या (हो गया है) तुम्हें

وَالْاَرْضِ ؕ لَا يَسْتَوِىْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ؕ

और क़िताल किया	फ़तह	पहले	जिस ने ख़र्च किया	तुम में से	बराबर नहीं	और ज़मीन

اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَقٰتَلُوْا ؕ

और उन्हों ने क़िताल किया	बाद में	जिन्हों ने ख़र्च किया	से	दरजे	बड़े	यह लोग

ع ١ ١٠ ١٧ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١٠﴾

10	बाख़बर	उस से जो तुम करते हो	और अल्लाह	अच्छा	वादा किया अल्लाह ने	और हर एक

वही जिस ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को छः दिन में, फिर उस ने अ़र्श पर क़रार पकड़ा, वह जानता है जो ज़मीन में दाख़िल होता है और जो उस से निकलता है, और जो आस्मानों से उतरता है और जो उस में चढ़ता है, और वह तुम्हारे साथ है जहां कहीं (भी) तुम हो, और जो तुम करते हो अल्लाह है उसे देखने वाला। (4) उसी के लिए है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत, और अल्लाह की तरफ़ है तमाम कामों का लौटना। (5) वह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है, और वह है ख़ूब जानने वाला दिलों की बात (तक) को। (6) तुम अल्लाह और उस के रसूल (स) पर ईमान लाओ और उस (माल) में से ख़र्च करो जिस में उस ने तुम्हें जांनशीन बनाया है, पस तुम में से जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने ख़र्च किया, उन के लिए बड़ा अजर है। (7) और तुम्हें क्या हो गया? कि तुम ईमान नहीं लाते अल्लाह और उस के रसूल (स) पर, जबकि वह तुम्हें बुलाते हैं कि तुम अपने रब पर ईमान ले आओ, और वह यक़ीनन तुम से अ़हद ले चुका है अगर तुम ईमान वाले हो। (8) वही है जो अपने बन्दे पर वाज़ेह आयात नाज़िल फ़रमाता है, ताकि वह तुम्हें निकाले अन्धेरों से रोशनी की तरफ़, और बेशक अल्लाह तुम पर शफ़क़त करने वाला मेहरबान है। (9) और तुम्हें क्या हो गया? कि तुम ख़र्च नहीं करते अल्लाह के रास्ते में, और अल्लाह के लिए है आस्मानों और ज़मीन की मीरास (बाक़ी रह जाने वाला सब), तुम में से बराबर नहीं वह जिस ने ख़र्च किया और क़िताल किया फ़त्हे (मक्का) से पहले, यह लोग दरजे में (उन) से बड़े हैं जिन्हों ने बाद में ख़र्च किया और उन्हों ने क़िताल किया, और अल्लाह ने हर एक से अच्छा वादा किया है और जो तुम करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (10)

مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَیُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗۤ

और उस के लिए	उस को	पस बढ़ादे वह उस को दोगुना	क़र्ज़ हसना	क़र्ज़ दे अल्लाह को	कौन है जो

اَجْرٌ كَرِیْمٌ ﴿۱۱﴾ یَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ یَسْعٰى نُوْرُهُمْ

उन का नूर	दौड़ता होगा	और मोमिन औरतों	मोमिन मर्दों	तुम देखोगे	जिस दिन	11	अजर बड़ा उम्दा

بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَبِاَیْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْیَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا

उन के नीचे	बहती हैं	बाग़ात	आज	ख़ुशख़बरी तुम्हें	और उन के दाएं	उन के सामने

الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ ﴿۱۲﴾ یَوْمَ یَقُوْلُ

जिस दिन कहेंगे	12	कामयाबी बड़ी	वह-यह	यह	उस में	वह हमेशा रहेंगे	नहरें

الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ

से	हम हासिल कर लें	हमारी तरफ़ निगाह करो	वह ईमान लाए	उन लोगों को जो	और मुनाफ़िक़ औरतें	मुनाफ़िक़ मर्द (जमा)

نُّوْرِكُمْ ۚ قِیْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ؕ فَضُرِبَ بَیْنَهُمْ

उन के दरमियान	फिर मारी (खड़ी कर दी) जाएगी	नूर	फिर तुम तलाश करो	अपने पीछे	लौट जाओ तुम	कहा जाएगा	तुम्हारा नूर

بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ؕ بَاطِنُهٗ فِیْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ﴿۱۳﴾

13	अज़ाब	उस की तरफ़ से	और उस के बाहर	रहमत	उस में	उस के अन्दर	एक दरवाज़ा	उस का	एक दीवार

یُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ

अपनी जानों को	तुम ने फ़ित्ने में डाला	और लेकिन तुम	हाँ	वह कहेंगे	तुम्हारे साथ	क्या हम न थे	वह उन्हें पुकारेंगे

وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِیُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ

अल्लाह का हुक्म	आ गया	यहां तक कि	तुम्हारी झूटी आर्ज़ूएं	और तुम्हें धोके में डाला	और तुम शक करते थे	और तुम इन्तिज़ार करते

وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿۱۴﴾ فَالْیَوْمَ لَا یُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْیَةٌ وَّلَا مِنَ

से	और न	कोई फ़िदया	तुम से	न लिया जाएगा	सो आज	14	धोका देने वाला	अल्लाह के बारे में	और तुम्हें धोके में डाला

الَّذِیْنَ كَفَرُوْا ؕ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ؕ هِیَ مَوْلٰىكُمْ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِیْرُ ﴿۱۵﴾

15	लौटने की जगह	और बुरी	तुम्हारी मौला	यह	जहन्नम	ठिकाना तुम्हारा	कुफ़्र किया	वह लोग जिन्हों ने

اَلَمْ یَاْنِ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ

और जो नाज़िल हुआ	अल्लाह की याद के लिए	उन के दिल	झुक जाएं	कि	उन लोगों के लिए जो ईमान लाए (मोमिन)	क्या नज़दीक (वक़्त) नहीं आया

مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا یَكُوْنُوْا كَالَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ

तो दराज़ हो गई	इस से क़ब्ल	जिन्हें किताब दी गई	उन लोगों की तरह	और वह न हो जाएं	हक़	से

عَلَیْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَكَثِیْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۱۶﴾ اِعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ

कि अल्लाह	तुम जान लो	16	फ़ासिक़ (नाफ़रमान)	उन में से	और कसीर	उन के दिल	फिर सख़्त हो गए	मुद्दत	उन पर

یُحْیِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ قَدْ بَیَّنَّا لَكُمُ الْاٰیٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۷﴾

17	समझो	ताकि तुम	निशानियां	तुम्हारे लिए	तहक़ीक़ हम ने बयान कर दी	उस के मरने के बाद	ज़मीन	ज़िन्दा करता है

कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे? क़र्ज़े हसना (अच्छा क़र्ज़), पस वह उस को दोगुना बढ़ादे और उस के लिए बड़ा अम्दा अजर है। (11)
जिस दिन तुम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखोगे कि उन का नूर उन के सामने और उन के दाएं दौड़ता होगा, तुम्हें आज ख़ुशख़बरी है बाग़ात की जिन के नीचे बहती हैं नहरें, वह उन में हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (12)
जिस दिन कहेंगे मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें उन लोगों को जो ईमान लाए, हमारी तरफ़ निगाह करो, हम तुम्हारे नूर से (कुछ) हासिल कर लें, कहा जाएगाः अपने पीछे लौट जाओ, पस (वहां) नूर तलाश करो। फिर उन के दरमियान एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी, उस का एक दरवाज़ा होगा, उस के अन्दर रहमत और उस के बाहर की तरफ़ अ़ज़ाब होगा। (13)
वह (मुनाफ़िक़) उन (मुसलमानों) को पुकारेंगेः क्या हम तुम्हारे साथ न थे? वह कहेंगेः हाँ (क्यों नहीं!) लेकिन तुम ने अपनी जानों को फ़ित्ने में डाला, और तुम इन्तिज़ार करते और शक करते थे और तुम्हें तुम्हारी झूटी आर्ज़ूओं ने धोके में डाला यहां तक कि अल्लाह का हुक्म आ गया और अल्लाह के बारे में तुम्हें धोका देने वाले (शैतान) ने धोके में डाला। (14)
सो आज न तुम से कोई फ़िदया लिया जाएगा और न उन लोगों से जिन्हों ने कुफ़्र किया, तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है, यह तुम्हारी ख़बर गीरी करने वाली और बुरी लौटने की जगह है। (15)
क्या मोमिनों के लिए अभी वक़्त नहीं आया? कि उन के दिल अल्लाह की याद के लिए झुक जाएं और (उस के लिए) जो हक़ तआ़ला की तरफ़ से नाज़िल हुआ है, और वह उन लोगों की तरह न हो जाएं जिन्हें इस से क़ब्ल किताब दी गई, फिर एक लम्बी मुद्दत उन पर गुज़र गई तो उन के दिल सख़्त हो गए, और उन में से अक्सर नाफ़रमान हैं। (16)
(ख़ूब) जान लो कि अल्लाह ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा करता है। तहक़ीक़ हम ने तुम्हारे लिए निशानियां बयान कर दी हैं ताकि तुम समझो। (17)

اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ

वह दो चन्द कर दिया जाएगा उन के लिए	हसना (अच्छा)	क़र्ज़	और जिन्हों ने क़र्ज़ दिया अल्लाह को	और ख़ैरात करने वाली औरतें	ख़ैरात करने वाले मर्द	बेशक

وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿١٨﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ

वही	यही लोग	और उस के रसूल (जमा)	अल्लाह पर	ईमान लाए	और जो लोग	18	बड़ा उम्दा	अजर	और उन के लिए

الصِّدِّيْقُوْنَ ۖ وَالشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ۭ

और उन का नूर	उन का अजर	उन के लिए	नज़्दीक अपने रब के	और शहीद (जमा)	सिद्दीक़ (जमा)

ع ٢ ٩ ١٨
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿١٩﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا

इस के सिवा नहीं	तुम जान लो	19	दोज़ख़ वाले	यही लोग	हमारी आयतों को	और झुटलाया	और जिन्हों ने कुफ़्र किया

الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ

और कस्रत की ख़ाहिश	बाहम	और फ़ख़्र करना	और ज़ीनत	और कूद	खेल	दुनिया की ज़िन्दगी

فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ۭ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ

फिर वह ज़ोर पकड़ती है	उस की पैदावार	काश्तकार	भली लगी	बारिश की तरह	और औलाद	मालों में

فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطٰمًا ۭ وَفِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ

और मग़्फ़िरत	सख़्त अज़ाब	और आख़िरत में	चूरा चूरा	वह हो जाती है	फिर	ज़र्द	सो तू उस को देखता है

مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿٢٠﴾

20	धोके का सामान	मगर-सिर्फ़	दुनिया की ज़िन्दगी	और नहीं	और रज़ा मन्दी	अल्लाह की तरफ़ से

سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ

आस्मान	जैसी चौड़ाई (वुस्अ़त)	उस की चौड़ाई (वुस्अ़त)	और जन्नत	अपने रब की तरफ़ से	मग़्फ़िरत	तरफ़	तुम दौड़ो

وَالْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۭ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ

अल्लाह का फ़ज़्ल	यह	और उस के रसूलों	अल्लाह पर	ईमान लाए	उन लोगों के लिए जो	वह तैयार की गई	और ज़मीन

يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢١﴾ مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ

कोई मुसीबत	नहीं पहुँचती	21	बड़े	फ़ज़्ल वाला	और अल्लाह	जिसे वह चाहे	वह उस को देता है

فِي الْاَرْضِ وَلَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ۭ اِنَّ

बेशक	कि हम पैदा करें उस को	उस से क़ब्ल	किताब में	मगर	तुम्हारी जानों में	और न	ज़मीन में

ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿٢٢﴾ لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا

और न तुम ख़ुश हो	जो तुम से जाती रहे	पर	ताकि तुम ग़म न खाओ	22	आसान	अल्लाह पर	यह

بِمَآ اٰتٰىكُمْ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ﴿٢٣﴾ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ

बुख़्ल करते हैं	जो लोग	23	फ़ख़्र करने वाले	इतराने वाले	हर एक (किसी)	पसंद नहीं करता	और अल्लाह	उस पर जो उस ने तुम्हें दिया

وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٤﴾

24	सज़ावारे हम्द	वह बेनियाज़	तो बेशक अल्लाह	मुँह फेर ले	और जो	बुख़्ल का	लोग	और हुक्म (तरग़ीब) देते हैं

बेशक ख़ैरात करने वाले मर्द और ख़ैरात करने वाली औरतें, और जिन्हों ने अल्लाह को क़र्ज़ हसना (अच्छा क़र्ज़) दिया, वह उन के लिए दो चन्द कर दिया जाएगा, और उन के लिए बड़ा उम्दा अजर है। (18) और जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाए, यही लोग हैं अपने रब के नज़्दीक सिद्दीक़ (सच्चे) और शहीद, उन के लिए उन का अजर है और उन का नूर, और जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया, यही लोग दोज़ख़ वाले हैं। (19) तुम (ख़ूब) जान लो, इस के सिवा नहीं कि दुनिया की ज़िन्दगी (महज़) खेल कूद है, और एक ज़ीनत और बाहम फ़ख़्र (ख़ुद सताई) करना और कस्रत की ख़ाहिश करना मालों में और औलाद में, बारिश की तरह कि काश्तकार को उस की पैदावार भली लगी, फिर वह ज़ोर पकड़ती है, पस तू उस को देखता है ज़र्द, फिर वह चूरा चूरा हो जाती है, और आख़िरत में सख़्त अ़ज़ाब भी है और मग़्फ़िरत भी है अल्लाह की तरफ़ से और रज़ा मन्दी, और दुनिया की ज़िन्दगी धोके के सामान के सिवा कुछ भी नहीं। (20) तुम दौड़ो मग़्फ़िरत की तरफ़ अपने रब की, और उस जन्नत की तरफ़ जिस की वुस्अ़त आस्मानों और ज़मीन की वुस्अ़त जैसी (बराबर) है, उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो ईमान लाए अल्लाह और उस के रसूलों पर, यह अल्लाह का फ़ज़्ल है, वह उस को देता है जिसे वह चाहता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (21) कोई मुसीबत नहीं पहुँचती ज़मीन में और न तुम्हारी जानों में मगर किताब में (दर्ज) है, इस से पहले कि हम उस को पैदा करें, बेशक यह अल्लाह पर आसान है। (22) ताकि तुम उस पर ग़म न खाओ जो तुम से जाती रहे और न ख़ुश हो जाओ उस पर जो उस ने तुम्हें दिया, और अल्लाह किसी इतराने वाले, फ़ख़्र करने वाले को पसंद नहीं करता। (23) जो लोग बुख़्ल करते हैं और तरग़ीब देते हैं लोगों को बुख़्ल की, और जो मुँह फेर ले तो बेशक अल्लाह बेनियाज़, सज़ावारे हम्द (सतोदा सिफ़ात) है। (24)

لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَاَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ

तहक़ीक़ हम ने भेजा	अपने रसूलों	वाज़ेह दलाइल के साथ	और हम ने उतारी	उन के साथ	किताब

وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَاَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ

और मीज़ाने (अ़दल)	ताकि क़ाइम रहें	लोग	इंसाफ़ पर	और हम ने उतारा	लोहा	उस में

بَاْسٌ شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ

लड़ाई (ख़तरा) सख़्त	और फ़ायदा	लोगों के लिए	और ताकि मालूम कर ले अल्लाह	कौन	मदद करता है उस की

ع ٣ ٦ ١٩

وَرُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا

और उस के रसूल	बिन देखे	बेशक अल्लाह	क़व्वी	ग़ालिब	25	और तहक़ीक़ हम ने भेजा	नूह (अ)

وَّاِبْرٰهِيْمَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ

और इब्राहीम (अ)	और हम ने रखी	उन की औलाद में	नुबूव्वत	और किताब	सो उन में से कुछ	हिदायत याफ़्ता

وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا

और अक्सर	उन में से	नाफ़रमान	26	फिर	हम उन के पीछे लाए	उन के क़दमों के निशानात पर	अपने रसूल	और हम उन के पीछे लाए

بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ ۙ وَجَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ

ईसा (अ)	इब्ने मरयम (अ)	और हम ने उसे दी	इंजील	और हम ने डाल दी	दिलों में	वह लोग जिन्हों ने

اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّرَحْمَةً ۭ وَرَهْبَانِيَّةَ ۨ اِبْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا

उस की पैरवी की	नर्मी	और रहमत	और तरके दुनिया	जो उन्हों ने ख़ुद निकाली	हम ने वाजिब नहीं की

عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَاۗءَ رِضْوَانِ اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ

उन पर	मगर	चाहना	अल्लाह की रज़ा	तो न	उस को निबाहा	उस को निबाहने का हक़

فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٧﴾

तो हम ने दिया	उन लोगों के लिए जो ईमान लाए	उन में से	उन का अजर	और अक्सर	उन में से	नाफ़रमान	27

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ

ऐ	जो लोग ईमान लाए	डरो अल्लाह से तुम	और ईमान लाओ	उस के रसूलों पर	वह तुम्हें अ़ता करेगा

كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ

दो हिस्से	से	अपनी रहमत	और कर देगा	तुम्हारे लिए	ऐसा नूर	तुम चलोगे	उस के साथ	और वह बख़्शदेगा	तुम्हें

وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٨﴾ لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ

और अल्लाह	बख़्शने वाला	मेहरबान	28	ताकि जान लें	अहले किताब	कि वह क़ुदरत नहीं रखते

عَلٰي شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ

किसी शै पर	से	अल्लाह का फ़ज़्ल	और यह कि	फ़ज़्ल	अल्लाह के हाथ में	वह देता है उसे

ع ٤ ٢٠

مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾

जिस को वह चाहता है	और अल्लाह	फ़ज़्ल वाला	बड़ा	29

तहक़ीक़ हम ने अपने रसूलों को भेजा वाज़ेह दलाइल के साथ और हम ने उन के साथ उतारी किताब और मीज़ाने अ़दल ताकि लोग इंसाफ़ पर क़ाइम रहें, और हम ने लोहा उतारा, उस में सख़्त ख़तरा (बला की सख़्ती) है और लोगों के लिए कई फ़ायदे हैं, और ताकि अल्लाह मालूम कर ले कि कौन उस की मदद करता है और उस के रसूलों की, बिन देखे, बेशक अल्लाह क़व्वी, ग़ालिब है। (25)

और तहक़ीक़ हम ने नूह (अ) और इब्राहीम (अ) को भेजा और हम ने उन की औलाद में नुबूव्वत और किताब रखी। सो उन में से कुछ हिदायत याफ़्ता हैं, और उन में से अक्सर नाफ़रमान हैं। (26)

फिर हम ने उन के क़दमों के निशानात पर (उन के पीछे) अपने रसूल लाए, और उन के पीछे हम ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) को लाए और हम ने उसे इंजील दी, और जिन लोगों ने उस की पैरवी की उन के दिलों में नर्मी और मुहब्बत डाल दी। और तरके दुनिया (जिस की रस्म) ख़ुद उन्हों ने निकाली हम ने उन पर वाजिब न की थी, मगर (उन्हों ने) अल्लाह की रज़ा चाहने के लिए (इख़्तियार की) तो उस को न निबाहा (जैसे) उस के निबाहने का हक़ था, तो उन में से जो लोग ईमान लाए हम ने उन्हें उन का अजर दिया, और अक्सर उन में से नाफ़रमान हैं। (27)

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह से डरो और उस के रसूलों पर ईमान लाओ, वह अपनी रहमत से (सवाब के) दो हिस्से अ़ता करेगा और तुम्हारे लिए एसा नूर कर देगा कि तुम उस के साथ चलोगे और वह बख़्श देगा तुम्हें, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (28)

ताकि अहले किताब जान लें कि वह अल्लाह के फ़ज़्ल में से किसी शै पर क़ुदरत नहीं रखते, और यह कि फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ में है, वह उसे देता है जिस को वह चाहे और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (29)